भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग ✦ INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

नवीन पूर्वांचल संदेश

वार्षिक पत्रिका : 15वाँ अंक

वर्ष : 2019-20

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग - 793001

फैक्स संख्या : 0364-2223103, ई-मेल- agaemeghalaya@cag.gov.in

"हिन्दी दिवस **2019**" के पावन अवसर पर मुख्य अतिथि "प्रोफ़ेसर श्री कृष्ण श्रीवास्तव", कुलपति महोदय, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन की एक झलक।

"हिन्दी दिवस **2019**" के पावन अवसर पर प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग, महोदय के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन की एक झलक।

"हिन्दी दिवस **2019**" के पावन अवसर पर वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन), महोदय द्वारा मुख्य अतिथि "प्रोफ़ेसर श्री कृष्ण श्रीवास्तव", कुलपति महोदय, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग को भेंट स्वरूप हिंदी पुस्तक अर्पित करने की एक झलक।

हिन्दी दिवस **2019** के पावन अवसर पर मुख्य अतिथि "प्रोफ़ेसर श्री कृष्ण श्रीवास्तव", कुलपति, महोदय, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, प्रधान महालेखाकार महोदय (लेखापरीक्षा) मेघालय, शिलांग एवं प्रधान महालेखाकार महोदय (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग के कर कमलों द्वारा वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के **14** वें संस्करण के विमोचन की एक झलक।

"हिन्दी दिवस **2019**" के पावन अवसर पर सहायक कल्याण अधिकारी द्वारा मुख्य अतिथि "प्रोफ़ेसर श्री कृष्ण श्रीवास्तव", कुलपति महोदय, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग को भेंट स्वरूप पारंपरिक "खासी शाल" अर्पित करने की एक झलक।

"हिन्दी दिवस **2019**" के पावन अवसर पर मुख्य अतिथि "प्रोफ़ेसर श्री कृष्ण श्रीवास्तव", कुलपति महोदय, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, सभागार में उपस्थित सभी गणमान्यों को सम्बोधित करते हुए।

"नवीन पूर्वांचल संदेश"

वार्षिक पत्रिका : 15 वां अंक

वर्ष : 2019–20

पत्रिका परिवार

संरक्षक : श्री अथिखो चलाई
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

प्रधान संपादक : श्री पृथ्वीपाल सिंह कानावत
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

परामर्शदाता : श्री आनंद कौशल, वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक मंडल : श्रीमती स्निग्धा फुकन, हिन्दी अधिकारी
: श्री पुरुषोत्तम गिरि, कनिष्ठ अनुवादक
: श्रीमती शालिनी दहिया, कनिष्ठ अनुवादक

आवरण पृष्ठ

मेघालय के पर्यटन स्थलों की झलकियाँ

नोटः पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित विचार रचनाकारों के निजी हैं, उससे संपादक मंडल या संरक्षक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

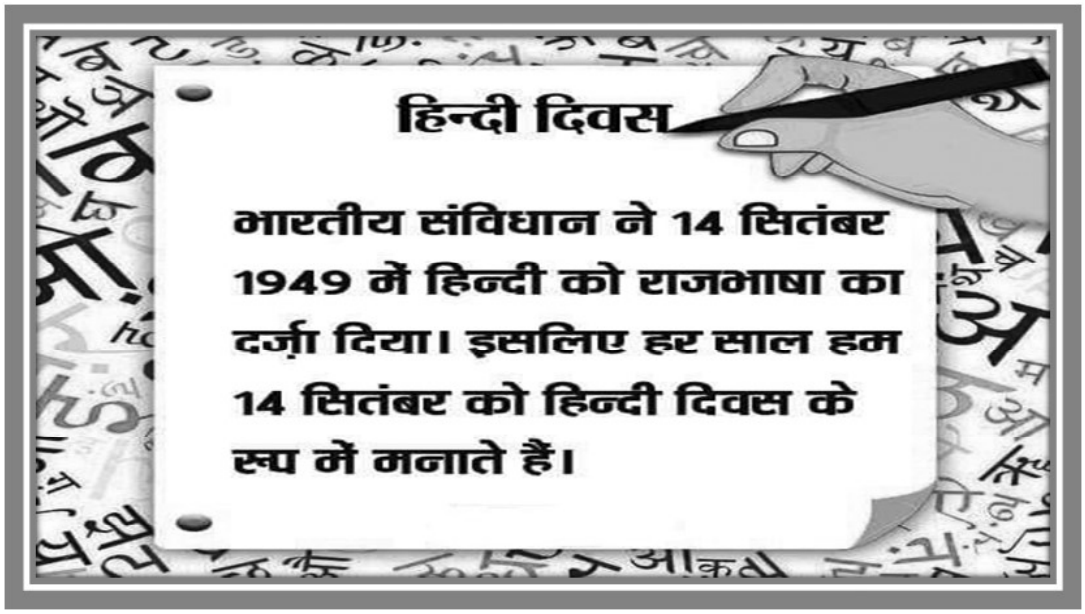

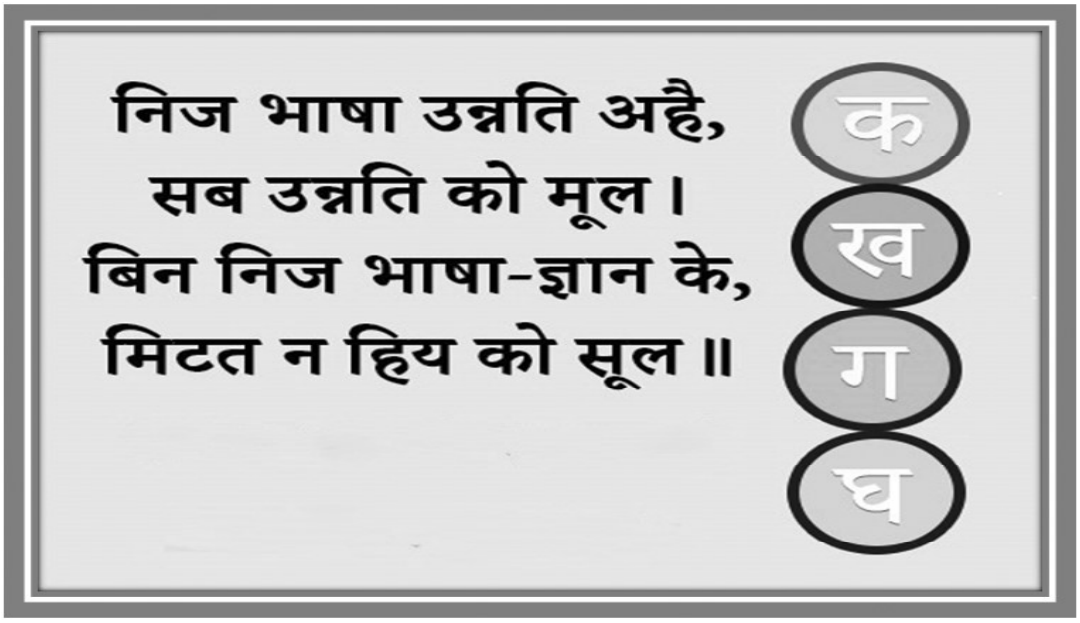

हिन्दी दिवस-2020 के पावन अवसर पर...
सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।।

हिन्दी प्रकोष्ठ
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

"नवीन पूर्वांचल संदेश"

वार्षिक पत्रिका : 15 वां अंक

वर्ष : 2019-20

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	लेखक/लेखिका	पृष्ठ संख्या
1.	वास्तविकता	श्री आनंद कौशल	1
2.	खोनोमा	श्री पुरूषोत्तम गिरि	3
3.	करुणा-धारा	श्री प्रियतोष चौधुरी	7
4.	प्लास्टिक हटाओ, धरती बचाओ	श्रीमती स्निग्धा फुकन	8
5.	आह्वान	सुश्री प्रीति जोशी	11
6.	हर सदियों का एक दर्द	श्रीमती मंजिता राय चौधुरी	12
7.	डिजिटल मार्केटिंग	श्री पार्थ ज्योति दे	13
8.	खुद से प्यार करो	श्रीमती मेघा रानी प्रसाद	14
9.	हिवरे बाजार	श्री पुरूषोत्तम गिरि	15
10.	चाँदनी	श्री शंकर बी. थापा	18
11.	महिलाओं की गरिमा-सुरक्षा हेतु नियम	श्रीमती शालिनी दहिया	19
12.	मेरी भावनाएँ	श्रीमती नमिता भट्टाचार्या	23
13.	चिंता	श्री राहुल ढाका	23
14.	माँ	श्रीमती दीपा गुप्ता	24
15.	शुभ-विचार	श्रीमती सायंन्तनी गुप्ता	24
16.	मेघालय	श्रीमती पल्लवी सोम	25
17.	प्यारा हिंदुस्तान	श्री सुशांत बी. रसाईली	25
18.	शिशिर-वर्णन	श्रीमती सीमा थापा	26
19.	सिविल सेवा बनाम हिन्दी भाषा	श्री अमित कुमार वर्मन	26
20.	भक्ति की शक्ति	श्री प्रियतोष चौधुरी	27
21.	दिव्यांग और किताबें	श्री सुमित कुमार वर्मन	27
22.	माता-पिता	श्री पीटर चौधुरी	28
23.	कुछ पन्ने	श्रीमती उमा देवी थापा	28
24.	नई शिक्षा नीति	श्री अमित कुमार वर्मन	29

क्रमांक	विषय	लेखक/लेखिका	पृष्ठ संख्या
25.	पत्थरों के देश में	श्रीमती ममता दे	29
26.	बचपन की मजदूरी	सुश्री अदविका ढाका	30
27.	पारदर्शी कराधान	श्री सुमित कुमार वर्मन	30
28.	श्री सत्यपाल मलिक-राज्यपाल के कार्यकाल और विवरण	श्री प्रिंस तोमर	31
29.	राजभाषा हिन्दी	सुश्री प्रीति जोशी	31
30.	शब्द-बाण	श्री नीरज कुमार गुप्ता	32
31.	संघर्ष : एक अमृत	श्री नीरज कुमार गुप्ता	33
32.	माँ की पीड़ा	श्री राजीव जोशी	34
33.	दोस्ती	श्री सुरेन्द्र कुमार	35
34.	अध्यात्म एक आंतरिक विज्ञान	श्री नीरज कुमार गुप्ता	35
35.	परमात्मा की लाठी	श्रीमती मोनिका तोमर	36
36.	कोरोना के फरिश्ते	श्री घनश्याम कुमार	37
37.	योग	श्री मनीष कुमार	38
38.	चुटकुला	श्री क्रिश राज देब	39
39.	मेरी बचपन की रेल यात्रा	श्री दीनानाथ साह	40
40.	सॉरी (SORRY)	श्रीमती मेघा रानी प्रसाद	42
41.	है क्या यह हँसी ?	श्री अरुण कुमार थापा	43
42.	चुटकुला	श्री क्रिश राज देब	43
43.	कौन है नीच	श्रीमती शालिनी दहिया	44

सुभाषित

"हिन्दी भाषा का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।" - *महात्मा गाँधी।*

"हिन्दी भाषा के लिए मेरा प्रेम सभी हिन्दी प्रेमी जानते हैं।" - *महात्मा गाँधी।*

"राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है।" - *महात्मा गाँधी।*

"राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।" - महात्मा गाँधी।

"राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ठ और गहरा संबंध है।"
- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

"हमारी राष्ट्रभाषा की पावन गंगा में देशी और विदेशी सभी प्रकार के शब्द मिलजुलकर एक हो जायेंगे।"
- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

"हिन्दी स्वयं अपनी ताकत से बढ़ेगी।" - पं. नेहरू।

"भाषा ही राष्ट्र का जीवन है।" - पुरुषोत्तमदास टंडन।

"हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।" - कमलापति त्रिपाठी।

"हिन्दी आज साहित्य के विचार से, रूढ़ियों से बहुत आगे है। विश्वसाहित्य में ही जानेवाली रचनाएँ उसमें हैं।"
- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला।

"हिन्दी अपनी भूमि की अधिष्ठात्री है।" - राहुल सांकृत्यायन।

"हिन्दी व्यापकता में अद्वितीय है।" - अम्बिका प्रसाद वाजपेयी।

"है भव्य भारत ही हमारी मातृभूमि हरी भरी। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि है नागरी।"
- मैथिलीशरण गुप्त।

"भारत की परंपरागत राष्ट्रभाषा हिन्दी है।" - नलिनविलोचन शर्मा।

"प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है।" - रामचंद्र शुक्ल।

"भाषा की उन्नति का पता मुद्रणालयों से भी लग सकता है।" - गंगाप्रसाद अग्निहोत्री।

"जीवन के छोटे से छोटे क्षेत्र में हिन्दी अपना दायित्व निभाने में समर्थ है।" - पुरुषोत्तमदास टंडन।

"हिन्दी में हम लिखें पढ़ें, हिन्दी ही बोलें।" - पं. जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी।

"अहिन्दी भाषा-भाषी प्रांतों के लोग भी सरलता से टूटी-फूटी हिन्दी बोलकर अपना काम चला लेते हैं।"
- अनंतशयनम् आयंगार।

"हिंदुस्तान की भाषा हिन्दी है और उसका दृश्यरूप या उसकी लिपि सर्वगुणकारी नागरी ही है।"
- गोपाललाल खत्री।

"हमारी नागरी दुनिया की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है।" - राहुल सांकृत्यायन।

"इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिन्दी को समझते हैं।"
- राहुल सांकृत्यायन।

"हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।" - स्वामी दयानंद।

"हिन्दी भाषा की उन्नति के बिना हमारी उन्नति असम्भव है।" - गिरधर शर्मा।

"हिन्दी समस्त आर्यावर्त की भाषा है।" - शारदाचरण मित्र।

"हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।" - कमलापति त्रिपाठी।

"हिन्दी जैसी सरल भाषा दूसरी नहीं है।" - मौलाना हसरत मोहानी।

"भारतवर्ष के लिए हिन्दी भाषा ही सर्वसाधरण की भाषा होने के उपयुक्त है।" - शारदाचरण मित्र।

"भारतीय साहित्य और संस्कृति को हिन्दी की देन बड़ी महत्त्वपूर्ण है।" - सम्पूर्णानन्द।

"हिन्दी जाननेवाला व्यक्ति देश के किसी कोने में जाकर अपना काम चला लेता है।" - देवव्रत शास्त्री।

"सभ्य संसार के सारे विषय हमारे साहित्य में आ जाने की ओर हमारी सतत् चेष्टा रहनी चाहिए।"
- श्रीधर पाठक।

"हिन्दी के पुराने साहित्य का पुनरुद्धार प्रत्येक साहित्यिक का पुनीत कर्तव्य है।" - पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल।

"भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक हिन्दी भाषा कुछ न कुछ सर्वत्र समझी जाती है।"
- पं. कृ. रंगनाथ पिल्लयार।

"मनुष्य सदा अपनी मातृभाषा में ही विचार करता है। इसलिए अपनी भाषा सीखने में जो सुगमता होती है, दूसरी भाषा में हमको वह सुगमता नहीं हो सकती।" - डॉ. मुकुन्दस्वरूप वर्मा।

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत

AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिन के शुभ अवसर पर, मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देना चाहता हूं।

पूरी दुनिया में हमारा देश, एक अलग प्रकार का देश है । कई प्रकार की संस्कृतियां, कई प्रकार की कलाएं और कई प्रकार की भाषाओं का मेलजोल यहां पर दिखाई पड़ता है। यह हमारी बहुत बड़ी ताकत है । हम सभी दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र हैं । अनेक भाषाएं एवं संस्कृतियां हमारी न केवल विरासत हैं, हमारी ताकत भी हैं, इसलिए हमें इसको आगे बढ़ाना है। सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे, इस गौरवशाली देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच, सदियों से, कई भाषाओं ने संपर्क बनाए रखने का काम किया है। हिंदी इसमें प्रमुख भाषा रही है और ये योगदान जो हिंदी का है इसको देश के कई नेताओं ने समय-समय पर सराहा है और हिंदी ने भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। हिंदी भाषा और बाकी सारी भारतीय भाषाओं ने मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है । हिंदी के साथ बृज, बुंदेलखंडी, अवधी, भोजपुरी, अन्य भाषाएं और बोलियां इसका उदाहरण हैं। हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों की अविरल धारा, मुख्य रूप से हिंदी भाषा से ही जीवन्त तथा सुरक्षित रह पाई है। हिंदी भाषा ने, बाकी स्थानीय भाषाओं को भी,बल देने का प्रयास किया है । हर राज्य की भाषा को,हिंदी ताकत देती है । हिंदी की प्रतिस्पर्धा कभी भी स्थानीय भाषा से नहीं रही, यह पूरे भारत के जनमानस में ज्यादा स्पष्ट होने की जरूरत है । 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं का प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहां आवश्यक है या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए, हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिंदी में किया जाए और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए । भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों तथा बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ वे सरकारी कामकाज में, मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज भारत एक संसाधन-संपन्न शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है और इसमें देश की समृद्ध भाषा हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। वैश्विक मंचों पर प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में दिए गए भाषणों से, हिंदी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है। इससे देश की युवा पीढ़ी भाषा के साथ जुड़ने की ओर अग्रसर हुई है। बस, आवश्यकता इस बात की है कि आगामी पीढ़ी को अधिक से अधिक सूचनाएं हिंदी में उपलब्ध कराई जाएं और उनमें ऐसे संस्कार विकसित किए जाएं कि वह मूल रूप से हिंदी भाषा में काम करें।

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के लिए ई-टूल्स सुदृढ़ करने का काम किया जा रहा है। 'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके। इसके अतिरिक्त लीला हिंदी प्रवाह, ई-महाशब्दकोश मोबाइल एप्लीकेशन भी हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। राजभाषा विभाग द्वारा ई-सरल हिंदी वाक्यकोश का विकास किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो पाएंगे। आज हिंदी दिवस के मौके पर मेरा यह कहना है कि सभी मंत्रालय सरकारी कामकाज में इन ई-टूल्स का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें।

विगत कई माह से पूरी दुनिया अत्यंत विषम परिस्थिति से गुज़र रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत कोरोना महामारी से लड़ने में सफल रहा और इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों के साथ प्रत्यक्ष नागरिकों ने भी सहयोग किया है। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर देश की जनता को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। कोरोना महामारी से उत्पन्न अप्रत्याशित संकट की स्थिति के कारण, जनहित को प्राथमिकता देते हुए इस वर्ष 'हिंदी दिन समारोह' का आयोजन नहीं किया जा रहा है लेकिन जिन मंत्रालयों, विभागों, संस्थाओं, बैंकों, सरकारी उपक्रमों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों ने पूरे वर्ष पूरी निष्ठा से हिंदी में श्रेष्ठ कार्य किया है और प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीते हैं, उन्हें मैं अपनी ओर से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। इसके साथ-साथ हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए प्रदान किए जाने वाले राजभाषा गौरव पुरस्कार विजेता भी बधाई के पात्र हैं ही। मैं आशा करता हूं कि आप सभी पुरस्कार विजेता यहीं से थकेंगे नहीं, भविष्य में, हिंदी के लिए कार्य करने के लिए, उच्च और अनुकरणीय मानदंड प्रस्थापित करते रहेंगे। ये प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा थी कि देश इस आपदा को अवसर में परिवर्तित करे। राजभाषा विभाग ने भी इस अवसर का सकारात्मक उपयोग करते हुए सूचना तकनीक का सहारा लिया और पहली बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसे ऑनलाइन माध्यमों के जरिए, बड़ी संख्या में, ई-निरीक्षण एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया। राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन शुरू किया गया जिसमें परंपरागत क्लासरूम टीचिंग को परिवर्तित कर, ऑनलाइन वेब कांफ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन करें, तत्परता के साथ अनुपालन करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों से राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ, निर्बाध रूप से उठा पाए।

आइए! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम प्रतिज्ञा लें कि हिंदी की उन्नति व प्रगति की यात्रा पूरे समर्पण के साथ हम आगे बढ़ाते हुए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को सभी स्थानीय भाषाओं के साथ में रखते हुए, हिंदी के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे। इस मौके पर, मैं देश के युवाओं को भी कहना चाहता हूं कि जब स्थानीय भाषा में बोलने वाला साथी हो तब और कोई भाषा का प्रयोग न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग का आग्रह रखिए। मैं अभिभावकों को भी कहना चाहता हूं,- अपने बच्चों के साथ भारतीय भाषाओं में बात करने की बात का संस्कार डालें और अपनी भाषाओं की यात्रा को हम आगे बढ़ाएं। मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति से अन्य भारतीय भाषाओं व हिंदी का समानांतर विकास होगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु, विश्वपटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित होगी।

'हिंदी दिन' के शुभ अवसर पर आप सभी को पुन: मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

भारत माता की जय!

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2020

(अमित शाह)

सत्यमेव जयते

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

संदेश

कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के **15** वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर, मैं अत्यंत प्रफुल्लित हूँ। इस पत्रिका के माध्यम से रचनात्मक प्रतिभाओं को सामने आने का अवसर प्राप्त होता है। कार्यालय के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

इसके अतिरिक्त मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी अपने पूर्व अंकों की तरह अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को प्रेरित करने के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में एवं इसके प्रति अभिरुचि और जागरूकता का वातावरण बनाने में सहायक होगी।

मैं, पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ और आशा करता हूँ कि सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण भविष्य में भी राजभाषा हिन्दी के प्रति अपने प्रेम एवं स्नेह का परिचय देते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

(अथिखो चलाई)

सत्यमेव जयते

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

संदेश

हिन्दी गृह पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के **15** वें अंक के प्रकाशन पर, मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी रचना कौशल प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करती है एवं हमारे कार्यालयीन कार्यों में व्यापक रूप से हिन्दी के प्रयोग हेतु हमें अपने उत्तरदायित्वों का स्मरण करवाती है।

"नवीन पूर्वांचल संदेश" के इस अंक के प्रकाशन में सभी रचनाकारों का योगदान अत्यधिक प्रशंसनीय है। पत्रिका सामग्री को अनवरत बेहतर करने के प्रयास हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका हमारी राजभाषा के प्रसार प्रचार के पथ पर मील का पत्थर सिद्ध होगी।

काहोतो

(काहोतो जे. येपथोमी)
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(लेखा/हकदारी एवं वी.एल.सी.)

सत्यमेव जयते

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

संदेश

इस कार्यालय की वार्षिक गृह पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" का **15** वां अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मन में हमारी राजभाषा हिन्दी के लिए जागरूकता लाने तथा रुचि जगाने के लिए छोटा सा प्रयास है और इस प्रयास के समर्थन में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हिन्दी में रचनाओं, लेख व कविताओं को लिखने का सार्थक प्रयास किया है जो कार्यालय द्वारा राजभाषा नीति के अनुपालन को भी दर्शाता है।

हमारा कार्यालय 'ग' क्षेत्र में स्थित है तथा अधिकांश अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण का हिन्दी के प्रति प्रेम एवं निष्ठा को देखकर मैं यह कह सकता हूँ कि हमारा कार्यालय हिन्दी के विकास एवं प्रचार-प्रसार हेतु निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने की दिशा में प्रयासरत है एवं कार्यालयीन वार्षिक गृह पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" का **15** वां अंक उसी का प्रतिफल है।

वे सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण बधाई के पात्र हैं, जिनके संयुक्त प्रयासों से "नवीन पूर्वांचल संदेश" पत्रिका प्रकाशित हो रही है, साथ ही मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाएँ ।

(पृथ्वीपाल सिंह कानावत)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
एवं प्रधान संपादक
"नवीन पूर्वांचल संदेश"

संपादकीय...

गृह पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" का **15** वां अंक सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए 'राजभाषा प्रकोष्ठ', कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग को अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय का दर्पण है, जिसके द्वारा हम इस कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक अभिरुचि के साथ-साथ अन्य कार्यालयीन गतिविधियाँ जैसे गणतंत्र दिवस समारोह एवं स्वतंत्रता दिवस समारोह के अतिरिक्त समय-समय पर आयोजित अन्य समारोह एवं प्रतियोगिताओं से संबंधित झलकियाँ भी देख सकते हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार- प्रसार में विभागीय हिन्दी पत्रिकाओं की विशेष भूमिका रही है। भाषा केवल शिक्षा का माध्यम ही नहीं अपितु संस्कृति का वाहक भी होती है। हिन्दी एक सरल एवं सहज भाषा है। हिन्दी अखिल भारतीय स्तर के अतिरिक्त वैश्विक स्तर पर भी समन्वय एवं संपर्क भाषा के रूप में भी प्रतिष्ठित है। हमारी इस पत्रिका के अधिकांश रचनाकारों की मातृभाषा हिन्दी नहीं है, परंतु उन्होंने अपनी ओर से इस पत्रिका के प्रकाशन में सहर्ष योगदान दिया है। भिन्न-भिन्न प्रकार की रचनाओं से ओत-प्रोत यह पत्रिका अधिकारियों एवं कर्मचारियों के उत्कृष्ठ लेखन-कला का प्रमाण है। भाषा व्यक्ति की अभिव्यक्ति को एक दूसरे से संप्रेषित करने का एक सशक्त माध्यम होती है। हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो दूसरी भाषाओं को आदरपूर्वक सम्मान देने के साथ-साथ अपने में आत्मसात् कर लेती है। इसलिए संविधान निर्माणकर्ताओं ने देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया है। राष्ट्रहित के लिए भारतीय संस्कृति के विकास एवं सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए हमें राजभाषा हिन्दी का प्रयोग वार्तालाप, पत्राचार एवं प्रत्येक क्षेत्र में अधिक से अधिक करना है। पत्रिका को त्रुटिरहित बनाने का प्रयास किया गया है। सुधी पाठकों से अनुरोध है कि इस पत्रिका के संदर्भ में, वे अपनी बहुमूल्य प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत कराएं।

हार्दिक शुभेच्छाओं सहित।

हिन्दी प्रकोष्ठ
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

पाठकों के अनमोल विचार.....

उपर्युक्त विषय पर आपके कार्यालय के पत्र संख्या- हि.प्र./1-4/2019-20/184 दिनांक **04.10.2019** के साथ संलग्न आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका **"नवीन पूर्वांचल संदेश"** अंक-**14** वें की एक प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई। हार्दिक धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ साजसज्जा एवं मुद्रण मनमोहक लगा।

इस नेक कार्य के लिए संपादक मंडल तथा महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग परिवार के समस्त सदस्यों को भी बहुत-बहुत धन्यवाद। आशा है कि उक्त पत्रिका का अनवरत प्रकाशन होता रहेगा।

अनुसंधान अधिकारी (कार्यान्वयन) एवं कार्यालय प्रमुख
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र), राजभाषा विभाग
शिलपुखुरी, गुवाहाटी

हम सभी जानते हैं कि किसी कार्यालय से प्रकाशित हिंदी पत्रिका द्वारा उस कार्यालय के साथ-साथ अन्य कार्यालयों के कार्यालय सदस्यों से भी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में अहम योगदान दिया जाता है ।

आपके कार्यालय की वार्षिक पत्रिका **"नवीन पूर्वांचल संदेश-चौदहवें अंक"** हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई है, उसके लिए धन्यवाद । आपकी पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएंध्लेख प्रेरणादायी एवं रोचक है, मुख्यतः **"गुरू और चेला, डस्टबिन-स्वच्छता का निशान, बारिश की बूँदें, अंधराष्ट्रभक्त और दुख दर्द अपने अपने" ।**

नवीन पूर्वांचल संदेश पत्रिका के सफल संपादन के लिए इससे जुड़े समस्त सदस्यों को बधाईय साथ ही आपकी पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ ।

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशा.),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) तेलंगाना,
सैफाबाद, हैदराबाद-**50004**

आपके कार्यालय द्वारा वार्षिक हिंदी पत्रिका **"नवीन पूर्वांचल"** के **14**वें अंक की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई, जिसमें पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा मुद्रण भी अति उत्तम है । सुश्री आकांक्षा पटेल, पत्नी श्री सुरेंद्र कुमार, आशुलिपिक का लेख "परिवार" व श्री विकास कुमार, डी..ई.ओ. की रचनाकार "जिंदगी की धूप-छाँव" अत्यंत ही प्रशंसनीय हैं ।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्धक, लाभप्रद तथा पूर्ण रूप से पठनीय है । श्रेष्ठ संपादन के लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (रा.भा.)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय)
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली–**110002**

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी गृह पत्रिका **"नवीन पूर्वांचल संदेश"** के चौदहवें अंक की प्रति प्राप्त हुई।

इस पत्रिका की सभी रचनाएँ उत्कृष्ठ व ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में सरल व बोधगम्य भाषा का प्रयोग किया गया है। हिंदी भाषा के उत्थान एवं लोकप्रिय बनाने हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है, इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं।

अगले अंक की शुभकामनाओं सहित।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, हिंदी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
उत्तराखंड

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका **"नवीन पूर्वांचल संदेश"** के **14** वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका प्रेषण के लिए अनेकानेक धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक एवं अर्थपरक हैं। रचनाकारों की प्रकाशित रचनाएं उनकी हिंदी भाषा के प्रति लगाव को व्यक्त करती हैं। पत्रिका की साज सज्जा भी अत्यंत सराहनीय है। सुश्री अकांक्षा पटेल का लेख परिवार, श्री विकास कुमार का लेख जिंदगी की धूप-छाँव, श्री अमित कुमार बर्मन का लेख समय का महत्व, श्री क्रिश राज देब का लेख मन के हारे हार है एवं श्री जेने विव का लेख दुख दर्द अपने अपने आदि रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। उत्कृष्ठ साज-सज्जा एवं सम्पादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
ओड़िसा, भुवनेश्वर

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक हिन्दी पत्रिका **"नवीन पूर्वांचल संदेश"** के चौदहवें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका की साज-सज्जा भी बहुत सुंदर है। कविताएँ एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। श्री विकास कुमार द्वारा लिखित लेख "जिंदगी की धूप-छांव", श्री आनंद कौशल द्वारा लिखित कहानी "अंतर्बोध", श्री पुरुषोत्तम गिरि द्वारा लिखित लेख "मंगल पर पहुंचेगी हिन्दी", श्री चन्दन कुमार द्वारा लिखित कविता "हिम्मत न हारो", श्री भागीरथ प्रसाद द्वारा लिखित कविता "इश्क", श्री अमित कुमार बर्मन द्वारा लिखित कविता "मैं पैसा हूँ", श्री मनीष कुमार द्वारा लिखित कविता "दहेज प्रथा", श्री राज कुमार सुनार द्वारा लिखित कविता "कल्पना", श्री जेनेविव हेक द्वारा लिखित कविता "दुःख दर्द अपने अपने" एवं श्रीमती नमिता भट्टाचार्य द्वारा लिखित कविता "बेटियाँ" सर्वाधिक रोचक एवं शिक्षाप्रद हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, हिंदी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(आर्थिक एवं क्षेत्र राजस्व लेखापरीक्षा), पश्चिम बंगाल

आपके कार्यालय के पत्रांक हिं.प्र./1–4/2019–20/219 दिनांक 15.10.2019 के साथ हिंदी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल प्रदेश" की एक प्रति प्राप्त हुई । धन्यवाद ।

"नवीन पूर्वांचल प्रदेश" राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियोंध कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है । हिंदी भाषा के सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपकी यह प्रयास सराहनीय है ।

पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं सरल भाषा में हैं और रोचक, ज्ञानवर्धक एवं उच्च कोटि की भी हैं । इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों में निश्चिंत ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा । पत्रिका का साज-सज्जा और अंतर्निहित फोटो आकर्षक एवं मनोरम हैं।

"नवीन पूर्वांचल प्रदेश" के उत्तम संपादन, गुणवत्ता, रचनात्मकता एवं संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ ।

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा), तमिलनाडु,
लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालई, तेनामपेट, चेन्नई-18

पत्र क्रमाँक हि. प्र./1–4/2019–20/224 दिनांक 11.10.2019 के तहत आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका **"नवीन पूर्वांचल संदेश"** के 14वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा सुंदर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक है। विशेष रूप से अमित कुमार बर्मन द्वारा लिखा गया लेख "जनसंख्या विस्फोट" के माध्यम से देश के वर्तमान दशा पर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया गया है। आपका कार्यालय "ग" क्षेत्र में होते हुए भी हिंदी के प्रति इतनी रुचि अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका के संपादन मण्डल एवं सभी रचनाकार बधाई के पात्र है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु ढेर सारी शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा),पश्चिम बंगाल

कार्यालयीन वार्षिक पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के चौदहवें अंक की प्राप्ति हुई, इसके लिए हार्दिक धन्यवाद। सुश्री आकांक्षा पटेल की कहानी "परिवार", श्री चन्दन कुमार की कविता "हिम्मत न हारो" तथा श्रीमती रीना मिश्र का लेख "अखंड विचार है अपना" विशेष रूप से प्रशंसनीय है, क्योंकि इनमें सारगर्भित तथा उत्कृष्ठ जानकारी मिलती है। पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर मेघालय के पर्यटन स्थलों की झल्कियाँ वहाँ कि स्थानीय संस्कृति का अनुपम दृश्य प्रदर्शित करती हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हिंदी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। कृपया अपना यही सार्थक प्रयास निरंतर रखें।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, राजभाषा
कार्यालय महालेखाकर (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) राजस्थान

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक हिंदी पत्रिका **"नवीन पूर्वांचल संदेश"** के चौदहवां अंक पत्र संख्या हि. प्र./ले.प./1–4/ 2019–20/226 दिनांक **11.10.2019** को प्राप्त हुआ।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ अत्यंत सुपाठय, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय है। ये सभी रचनाएं अत्यंत रुचिकर तथा प्रासंगिक भी हैं।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में से श्री पृथ्वीपाल सिंह कानावत का संस्मरण **'आनंद भूमि भूटान की यात्रा'** श्री मनीष कुमार की कविता **'दहेज प्रथा'**, सुश्री आकांक्षा पटेल का आलेख **'परिवार'**, श्री सुरेन्द्र कुमार की कविता **'देवी गीत'**, सुश्री शालिनी दहिया का आलेख **'धरती से चंद्रमा से मंगल- भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन की गगनचुंबी उपलब्धियां'**, श्री आनंद कौशल की कहानी **'अंतर्बोध'**, सुश्री कुमारी सरिता रानी की कविता **'स्मृतियाँ'**, श्री सुभ्रांषू शेखर की कविता **'मंदी की मार'**, श्री पुरुषोत्तम गिरि का आलेख **'मंगल पर पहुंचेगी हिंदी'**, सुश्री मधुश्री देब की कविता **'मातृ दिवस'**, श्री विक्रमजीत घोष द्वारा रचित **'प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष में योगदान हेतु एक अपील'**, श्री अमित कुमार बर्मन की कविता **'मैं पैसा हूँ'**, श्री दीनानाथ शाह का लेख **'जेम(GeM) सुविधा का अंदाज'**, श्री शंकर बी थापा की कविता **'आज की द्रौपदी'**, श्री जेनेविव हेक की कविता **'वादा'**, आदि विशिष्ट रूप से सराहनीय है।

पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी, राजभाषा
महा निदेशक, लेखा-परीक्षा का कार्यालय, केंद्रीय कोलकाता

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के चौदहवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व मनमोहक है। 'परिवार', 'हिम्मत मत हारो', 'मंदी की मार', 'कल्पना', 'तारे' आदि रचनाएँ रुचिकर एवं सराहनीय ही नहीं बल्कि संग्रहणीय भी हैं। अन्य सभी रचनाएँ भी पठनीय एवं विचारणीय हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

सधन्यवाद।

हिंदी अधिकारी/हिंदी कक्ष
महालेखाकार (लेखा. एवं हक.) का कार्यालय, कर्नाटका

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "नवीन पूर्वांचल संदेश" के चौदहवां अंक प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज-सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहारी बन पड़ा है। पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित आलेख, कविताएं, कहानियां, संस्मरण आदि अत्यंत स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में, विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में "नवीन पूर्वांचल संदेश" की भूमिका दिनानुदिन सशक्त हो रही है। यह बहुत ही सकरात्मक प्रक्रम है। इस अंक की प्रमुख रचनाओं में 'मूषक', 'गुरु और चेला', 'जनसंख्या विस्फोट', 'समय का महत्व', 'मौसम' के रूप आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका भविष्य में बेहतर करे यही कामना है।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

वास्तविकता

□ **श्री आनंद कौशल**
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

असीम अपने परिवार के साथ शाम के समय रात्रिभोज हेतु मेज पर बैठकर खाना खा रहे थे। खाना लगभग समाप्त हो रहा था। अचानक असीम के आँखों से आसूं निकल आए। यह देख उनकी पत्नी सीमा तथा बच्चों के होश उड़ गए। वे यह समझ नहीं पा रहें थे कि आखिर ऐसा क्या हो गया कि असीम आज अचानक रो पड़े। ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ था। सभी अपनी-अपनी कुर्सी से उठ कर असीम के पास आ गए और रोनी भरी स्वर में पूछने लगे।

"क्या हो गया जी आपको?
क्यों रो रहे हैं आप आज?
कुछ परेशानी हैं क्या?
क्यों दुःखी हैं आप?"
"पिताजी आपको क्या हो गया?
आप क्यों रो रहे हो?
हम से कुछ गलती हुई हैं क्या?
कहिए पिताजी।"

असीम मुस्कुराते हुए कहते हैं- "बस-बस ऐसा कुछ नहीं हैं। तुम सब शांत रहो। मुझे कुछ नहीं हुआ हैं। यह दुःख के आँसू नहीं है। मुझे क्यों दुःख होने लगा। भगवान का दिया हुआ हमारे पास सब कुछ हैं। तुम सब हो और अपनी - अपनी जगह सब अच्छे कार्य कर रहे हो। यह तो खुशी के आँसू हैं।"

यह सुन सभी के मन को शान्ति मिली और मुस्कुराने लगे। साथ ही अब सभी के मन में उत्सुकता हुई और सभी एक साथ पूछने लगे- "ऐसी क्या खुशी हैं हमें भी बताईए।

अच्छा-अच्छा हम बताएंगें।
क्या आपकी पदोन्नति हुई हैं।"
"अरे नहीं भाई, यह पदोन्नति की बात कहाँ से आई।
अब मेरी पदोन्नति होने से रही।"
यह सुन सिमरन, असिम की बेटी बोल पड़ी- "ऐसा क्यों सोचते हैं पिताजी?

अभी तो आपकी सेवा निवृत्ति के लिए काफी समय बाकी हैं। वर्तमान पद पर भी तो कई वर्ष हो चुके हैं।

वरिष्ठ अधिकारियों में भी तो आपकी वरीयता काफी आगे होगी?
फिर क्यों इतनी नकारात्मकता है?
आप चिंता न करें, आपकी पदोन्नति तो होनी ही है।"
"नहीं बेटी वास्तविकता को समझो। अब मैं **53** वर्ष का हो चुका हूँ। अब, विभाग वाले कहते हैं कि मुझ में इतनी क्षमता नहीं है कि मैं आगे की पदोन्नति का भार उठा पाऊँ। अब मुझे भी मुझसे पद में, उम्र में यहाँ तक की अनुभव में भी छोटे लोगों के अधीन कार्य करना होगा।"

सिमरन- "किन्तु पिताजी, पन्ना चाचा जी को पिछले माह ही पदोन्नति मिली और वे उप सचिव बने थे और वे

अगले माह को ही सेवा-निवृत्ति में जा रहें हैं। आपके लिए तो अभी लगभग सात वर्ष की अवधि सेवा-निवृत्ति हेतु बाकी हैं।

फिर?"

"हाँ बेटी पन्ना चाचा मंत्रालय में हैं, उनके यहाँ अगर कोई अधिकारी कल सेवा-निवृत्ति में जा रहा है और उसकी पदोन्नति होनी बाकी हैं तो उन्हें पदोन्नति दे दी जाती हैं। किन्तु हमारे यहाँ ऐसा नहीं होता।"

"किन्तु पिताजी सरकार तो एक ही है। मंत्रालय भी सरकार का ही है और आपका विभाग भी सरकारी है। फिर यह अंतर क्यों है?"

"क्या करें? आज के समय की यही वास्तविकता हैं। यह हमारे बस में नहीं हैं और जिन के बस में हैं उनकी अपनी ही वास्तविकता है। वह दूसरों के लिए क्यों सोचने लगें।"

"तब तो पिताजी, इस स्तर में पहुँचने के बाद कितने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को तो काम करने की इच्छा भी नहीं होती होगी? इतने वर्षों का अनुभव तो व्यर्थ ही होता है। यह तो सरकार के लिए भी नुकसान की बात है।"

प्रत्यक्ष रूप से सच्चाई तो यही हैं किन्तु कोई, किसी के लिए क्यों सोचेगा। सभी अपने-अपने अहंकार में डूबे हुए हैं।

तभी सीमा बोल पड़ती हैं- "यह तुम बाप बेटी कहाँ तक पहुँचे। तुमने यह नहीं बताया कि आखिर तुम किस चीज को लेकर इतने खुश थे कि तुम्हारी आँखें भर आई।"

असीम बोले, अरे हाँ, हम असली बातों को छोड़ यह कहाँ भटक गए? मैं कह रहा था कि यह मेरी खुशी के आँसू हैं। खाना खाते-खातेः "यह सेम की सब्जी जो तुम कितनी स्वादिष्ट बनाई हो ?"

सीमा बीच में बात काटती हुई बोली -

इसमें कौन सी नई बात है वह तो मैं रोज ही स्वादिष्ट सब्जी बनाती हूँ।

"हाँ सीमा, तुम्हारी हाथों में मिठास भरा हुआ हैं। तुम जो भी बनाती हो, इतनी स्वादिष्ट बनाती हो, जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। किन्तु यह सेम की सब्जी की बात ही कुछ और है। इसे खाते समय मेरे आखों के सामने माँ की तस्वीर घूमने लगी। उन्होंने यह सेम अपने हाथों से भैया के आवास के बगीचे में उगाया हैं। आज माता जी **77** वर्ष की आयु की हो चुकी हैं, फिर भी बगीचे में काम कर रहीं हैं और अपने बच्चों को स्वयं का उगाई हुई चीजें खिला रहीं हैं। माँ की इस उम्र में उनकी स्वास्थ्य की यह गुणवत्ता देख मेरी खुशी अपनी सीमा को तोड़ गई और मेरे आँखों से खुशी के आँसू टपक पड़ें। हम सब भाग्यवान हैं कि हमारे पास ऐसी स्वस्थ एवं सक्रिय माँ हैं। हमें उनसे सीख लेनी चाहिए। ईश्वर सब को ऐसा सौभाग्य प्रदान करें।"

असीम की बातों को सुनकर परिवार के सभी लोगों की आँखें भर आईं और वे सभी उनके गले लग गए।

खोनोमा

□ **श्री पुरूषोत्तम गिरि**
कनिष्ठ अनुवादक

नमस्कार।

सभी सुधी पाठकों से अनुरोध है कि इस आलेख के माध्यम से भारत का प्रथम हरित ग्राम-'खोनोमा गाँव' की यात्रा करते हैं।

नागालैंड हरी-भरी वादियों एवं पहाड़ियों, झरनों एवं जैव विविधता से सम्पन्न राज्य है। नागालैंड प्रदेश में **16** प्रकार की नागा जन-जातियां रहती है, जिनकी अपनी बोली, भाषा, पहनावा, लोक परंपरा एवं संस्कृति है। संगीत एवं नृत्य इनके जीवन का राग है। इन लोगों में वीरता, सुंदरता, प्रेम एवं उदारता का गुणगान करने वाली लोकगीत एवं लोक गाथाएँ पीढ़ियों से चली आ रही है। नागा जन-जातियों की जीवंत विरासत की झलक देखनी हो तो इनके गाँव में जरूर आइए।

नागालैंड राज्य सड़क, रेल एवं हवाई मार्ग से जुड़ा है। दीमापुर, नागालैंड का प्रवेशद्वार है एवं यहाँ का एकमात्र रेलवे स्टेशन तथा एकमात्र कार्यशील हवाई अड्डा है। लेकिन यहाँ आने से पहले एक प्रकार का सरकारी यात्रा दस्तावेज अर्थात इनर लाइन परमिट लेना अनिवार्य है। पर्यटकों के लिए 'कोहिमा' शहर एवं उसके आस-पास के क्षेत्रों में काफी कुछ प्राकृतिक आकर्षक एवं मनोरम दृश्य भी हैं।

यहाँ कई खुबसूरत पर्यटन स्थल हैं। नागालैंड की सबसे ऊँची चोटी सारामति भी यहीं है। दीमापुर में कछारी साम्राज्य की निशानियाँ, कोहिमा शहर का चर्च एवं युद्ध स्मारक दर्शनीय स्थल है। यहाँ कछारी राज्य के खंडहर भी देखने को मिलते हैं जो मशरूम के आकार के हैं। दीमापुर कछारी राज्य की प्राचीन राजधानी थी। यह महापाषाण युग के महत्वपूर्ण स्थलों में से एक है। कछारी राज्य पर **13**वीं सदी में आक्रमण हुआ था जिसके चलते यह राज्य तहस-नहस हो गया था। यह स्थान उसी आक्रमण के प्रमाण स्वरूप है। सबसे प्रसिद्ध कछारी के प्राचीन अवशेषों के बीच केवल पत्थरों के खंभे अवस्थित हैं। इन खंभे के अतिरिक्त, मंदिरों, टंकियों और तटबंधों के भी कई प्राचीन स्थल हैं। विभिन्न आकारों के बिखरे हुए पत्थर के टुकड़े भी आसपास पाए जाते हैं।

पर्यटन के नजरियों से यहाँ असीमित संभावनाएँ हैं। यहाँ के पहाड़ हिमालय के तरह कठोर पहाड़ नहीं हैं बल्कि भूरभूरे पहाड़ हैं। यहाँ बारिश के दौरान भूस्खलन की स्थिति होती है। यहाँ का पर्यटन 'इको टूरिज़्म' पर ही मुख्य रूप से आधारित है। यहाँ के लोगों के साथ रहने का अनुभव बहुत ही अद्‌भूत है। मेरा पर्यटकों से निवेदन है कि यहाँ के लोगों के साथ कुछ समय गुजारना बहुत ही खुबसूरत अनुभव की अनुभूति प्रदान करता है। यदि आप प्रकृति एवं वन्य जीव प्रेमी है एवं देश का प्रथम हरित ग्राम देखना चाहते है तो इसके लिए आपको नागालैंड आना होगा।

करीब **700** वर्ष पुराना जीवन विरासत वाला यह गाँव कई मायनों में खास है। यहाँ चारों ओर हरियाली है। इसे भारत का प्रथम हरित ग्राम भी कहते है। नागालैंड की राजधानी कोहिमा है। यहाँ मिश्रित आबादी है एवं यह एक आधुनिक शहर है। यहाँ दूसरे प्रदेशों के लोग भी आपको नजर आ जाएंगे, जो कई पीढ़ियों से यहाँ बसे हुए है। कोहिमा शहर में नागा अंगामी लोगों की बहुलता है। नागालैंड के इतिहास में अंगामी लोगों का एक विशिष्ट एवं गौरवशाली स्थान है। अंगामी, भारत के नागालैण्ड राज्य में बसने वाला एक समुदाय है। यह नागा समुदाय की एक शाखा है। अंगामी पारम्परिक रूप से अंगामी भाषा को अपनी मातृभाषा के रूप में प्रयोग करते हैं। वे नागालैण्ड के कोहिमा जिले एवं दीमापुर जिले में तथा

पड़ोसी मणिपुर राज्य में निवास करते हैं, हालांकि आधुनिक समय में पूरे भारत के प्रमुख नगरों में भी इनका निवास है। देश के अन्य हिस्सों के लोग भी यहाँ रहते हैं।

कोहिमा से करीब **20** किलोमीटर दूर 'खोनोमा गाँव' एक ऐतिहासिक गाँव है। यहाँ चारों ओर हरियाली है। 'खोनोमा गाँव' पहाड़ों पर स्थित है। खोनोमा एक अति प्राचीन गाँव है। इसका कोई भी लिखित इतिहास नहीं है। 'खोनोमा गाँव' में 'एल्डर पेड़' बहुत मात्रा में उपलब्ध हैं। इसके पत्ते मिट्टी को नमीयुक्त एवं उपजाऊ बनाते हैं। यहाँ सदियों से 'एल्डर पेड़' पर आधारित झूम कृषि का प्रचलन है। 'एल्डर पेड़' के पत्ते कृषि वाले क्षेत्रों में काफी उपयोगी होते हैं क्योंकि इस पेड़ के पत्ते काफी मात्रा में टूट कर जमीन पर गिरते हैं और इस तरह से मिट्टी की उर्वरता बढ़ाते हैं। इस पेड़ की जड़े मिट्टी के अंदर नमी बनाए रखते हैं एवं ये छोटे छोटे मिट्टी के ढ़ेले में तब्दील होकर नाइट्रोजन फिक्सेशन करते हैं। यह पेड़ देखने में भले ही आकर्षक न हो, इसकी कड़वी पत्तियों को पशु भी नहीं खाते है, पर यहाँ के लोग इस 'एल्डर पेड़' को प्रकृति का वरदान मानते है। यहाँ के कई 'एल्डर पेड़' **200** वर्ष से भी अधिक पुराने हैं। ये पेड़ मृदाक्षरण एवं भूस्खलन के खतरे को कम कर पर्यावरण संरक्षण में अहम भूमिका निभाते हैं।

'एल्डर पेड़' से भरे घने जंगलों को देखते हुए गाँव के चौराहे पर पहुंचा जाता है। इस गाँव में सब कुछ व्यवस्थित रूप में है। पर्यटकों को यहाँ पहुंचने में परेशानी न हो इसलिए चौराहे पर ही गाँव का नक्शा लगाया गया है। वर्तमान में 'खोनोमा गाँव' में करीब **4000** लोग रहते है। यह गांव **3** क्षेत्रों में विभाजित हुआ है जिसे 'खेल' कहते है। इनके नाम क्रमशः 'महरमा', 'सेमोमा' एवं 'थोबोमा' है। इन सभी खेलों में लोगों की अपनी किला है। किले के बाहर स्थापित शिला लेखों पर नजर डालने पर पता चलता है कि इस गाँव के लोगों ने कई युद्ध झेले हैं। किले के कई हिस्सों का समय-समय पर जीर्णोद्धार होता आया है। खोनोमा और इसके आसपास के पहाड़ एवं इसकी घाटियाँ पर्वतारोहियों एवं शोधार्थियों की पसंदीदा जगह है। यहाँ विद्यालय के बच्चे भी शैक्षणिक भ्रमण के लिए आते रहते है। इस गाँव के लोग पूरे वर्ष के दौरान सात प्रकार के पर्व मनाते है। फरवरी के महीने में आयोजित होने वाला 'सेकरेन्यी पर्व' **10** दिनों तक मनाया जाता है एवं इस पर्व में गाँव के सभी लोग पारंपरिक वेशभूषा एवं परिधान में भाग लेते हैं।

'सेकरेन्यी पर्व' अंगामी लोगों का खास पर्व है। इस गाँव के लोग मूलरूप से योद्धा होते हैं। वर्ष **1832** से पूर्व अंग्रेजों ने कई बार खोनामा गांव पर आक्रमण करने की कोशिश की लेकिन हर बार यहाँ के योद्धाओं ने अंग्रेजों को करारी शिकस्त दी।

नागा समुदाय में 'मोरुंग' अर्थात पारंपरिक सामुदायिक भवन का भी खासा महत्व है। सभी नागा लोगों की अपनी 'मोरुंग' होते है। 'मोरुंग' में युवा जीवन जीने की कला सीखते हैं। 'मोरुंग' में संस्कृति, परंपरा, पर्व-त्यौहारों के बारे में जानकारी प्रदान की जाती है। 'मोरुंग' में जीवन यापन हेतु जरूरी शिक्षा प्रदान की जाती है। 'मोरुंग' में एक आयु के बच्चे साथ रहते हैं। जब बच्चे **12** वर्ष की आयु के होते हैं तभी से वे परिवार के साथ रहने के बजाय 'मोरुंग' में रह सकते हैं, जिससे इन बच्चों में सामुदायिकता की भावना प्रबल होती है जबकि इस तरह की व्यवस्था सभी जगहों पर उपलब्ध नहीं होने के कारण दूसरे जगहों में इस तरह की सामुदायिकता की भावना की कमी है। नागालैंड के सुदूरवर्ती इलाकों में आज भी लोग युद्ध की कला में निपुण होते है। प्राचीन समय में युद्ध एवं शिकार करना इनके जीवनशैली का अहम हिस्सा था। यहाँ के लोग में युद्ध एवं आखेट की कला में निपुण होते हैं। इसके कारण समाज में सर्वाधिक मान सम्मान भी मिलता है। 'खोनोमा गाँव' के चौराहे पर पत्थरों से बनी सीढ़ियां भी है। इससे ऊपर जाने पर एक द्वार नजर आता है जो प्राचीन समय में मुख्य द्वार था। किसी भी आक्रमण की स्थिति में इसे बंद कर दिया जाता था। वनों के पेड़ों पर लगे फूल यहाँ की सुंदरता

को बढ़ाते है। अंग्रेजों ने 'खोनामा गाँव' में कई बार आक्रमण करने की कोशिश की लेकिन हर बार उन्हें करारी शिकस्त मिली। इन लोगों ने अंग्रेजों की गुलामी को कभी भी स्वीकार नहीं किया। यहाँ प्रथम आए अंग्रेज अधिकारी को अपनी जान गंवानी पड़ी थी। जिससे परेशान होकर अंग्रेजों ने इसे अपनी प्रतिष्ठा का सवाल बना लिया था। एक बार अंग्रेजों ने अपनी सैनिकों को लेकर इस गाँव में पहुचें एवं पूरे गाँव को घेर लिया। छह माह के अंतराल में अंग्रेजों ने इस गाँव पर चार बार आक्रमण किया था जिसका इन गाँव के लोगों ने करारा जवाब दिया था। अंग्रेजों ने गाँव के घरों एवं फसलों को जला दिया फिर भी इस गाँव के लोगों ने आत्मसमर्पण नहीं किया और सभी लोग गाँव के पहाड़ियों में जाकर रहने लगे। बाद में अंग्रेजों और गाँव के लोगों के बीच एक समझौता हुआ। खोनोमा के लोगों ने बहादुरी से अंग्रेजों का मुकाबला करके अपना नाम इतिहास के पन्नों में अंकित किया है। **4** नवम्बर **1879** में, अंग्रेजों ने कोहिमा को अपना मुख्यालय बनाया था। उसके बाद अंग्रेजों ने इन इलाकों में अपना प्रभुत्व जमाना शुरू किया था। इसके तहत पहले राजनीतिक एजेंट के रूप में 'जी. एच. दमन्त', जब खोनोमा गाँव में गृह कर वसूलने पहुँचा तो खोनोमा के पारंपरिक द्वार पर ही इस गाँव के लोगों ने उसे ढेर कर दिया। 'खोनोमा गाँव' युद्ध कौशल के कारण पूरी दुनिया में जाना जाता है।

दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जापानी सेना को खदेड़ने में भी इस गाँव के लोगों की अहम भूमिका रही है। ब्रिटिश शासन का विरोध से लेकर भारत के प्रथम हरित गाँव बनाने तक 'खोनोमा गाँव' ने काफी प्रगति की है। 'खोनोमा गाँव' में अमूमन सभी मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध है। यहाँ निजी वाहन एवं सरकारी बसों का परिचालन किया जाता है। इसके कारण यहाँ समुचित परिवहन की बेहतर व्यवस्था है। बिजली, पेयजल, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र एवं सिंचाई की भी समुचित व्यवस्था है। यहाँ की सड़कों पर सौर्य ऊर्जा से चलने वाली 'सोलर पैनेल' भी स्थापित किए गए है। यहाँ सामुदायिक शौचालय भी बनाए गए हैं। इसके अतिरिक्त इस गाँव में संचार की बेहतर सुविधा हेतु मोबाइल टावर की भी समुचित व्यवस्था है। किसी भी गांव के लिए यह बहुत ही खास अनुभव है क्योंकि पूर्वोत्तर के सुदूरवर्ती गांवों में अक्सर मोबाइल नेटवर्क की समस्या बनी रहती है जो इस गाँव में नहीं के बराबर है।

इस गाँव के लोग पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। नागालैंड में वन्य जीवों की शुरुआत सबसे पहले 'खोनोमा अभयारण्य' से हुई थी। जिसके कारण यह गांव पूरा हरा-भरा हो गया। पशु पक्षी आबाद हो गए। इसके बाद सरकार ने इसे कानूनी संस्वीकृति भी प्रदान की है। वन्य जीवों के संरक्षण के प्रति खोनोमा गाँव के लोगों की सोच एवं सामुदायिक पहल पूरी दुनिया के लिए मिसाल बन गई है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है कि नागालैंड में वन्य जीवों के संरक्षण कि शुरुआत सबसे पहले वर्ष **1997** में 'खोनोमा अभयारण्य' से हुई थी। इस तरह यहाँ वन संरक्षण का कार्यक्रम शुरू किया गया। धीरे- धीरे प्रस्ताव तैयार किया गया। वर्ष **1998** से यहाँ शिकार करना पूरी तरह से प्रतिबंधित है।

'खोनोमा गाँव' में परिषद भी है जो इस गांव की प्रशासनिक व्यवस्था की समुचित देख रेख करता है। सामुदायिक पहल के कारण यहाँ के लोगों ने अपनी जीवनशैली में भी काफी बदलाव किया है। पर्यावरण संरक्षण में इस गाँव के सभी लोगों की भागीदारी है। धीरे-धीरे वनों पर इस गांवों के लोगों की निर्भरता कम हुई है जिसके कारण इस गाँव के आसपास के सभी वन पूरे हरे-भरे हो गए हैं। अवैध शिकार एवं पेड़ों की कटाई रोकने हेतु इस गाँव में गश्ती दल का भी निर्माण किया गया है।

भारत सरकार के द्वारा वर्ष **2001** में **97** वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में स्थित 'खोनोमा नेचर कंजर्वेशन' एवं 'ट्रैगोपान सेंचुरी' को मान्यता मिली। वर्ष **2005** में खोनोमा को भारत का प्रथम हरित ग्राम का दर्जा मिला एवं इस संबंध इस गाँव

को पुरस्कार स्वरूप धनराशि एवं कई अन्य पुरस्कार प्रदान किए गए। वर्ष **2003** में खोनोमा में 'पर्यटन विकास बोर्ड' का गठन किया गया। पर्यटन की संभावनाएँ खोजी गई। पर्यटन बढ़ाने के लिए 'इको टूरिज़्म प्रबंधन कमेटी' बनाई गई। इसके बाद 'विलेज डेवलपमेंट बोर्ड', 'खोनोमा यूथ आर्गेनाइजेशन' एवं 'खोनोमा वुमेन यूनियन' को भी गठित किया गया। गाँव के घरों को चिन्हित करके 'स्टे होम' एवं आधुनिक सुविधा से युक्त 'लॉज' भी बनाया गया है। गाँव के लोगों के साथ-साथ बाहर के ऑपरेटर को बतौर गाइड बनाया गया है ताकि पर्यटकों को बेहतर वातावरण मिल सके। आज अपने देश में स्वच्छता हेतु कई तरह के अभियान चलाए जा रहे हैं जबकि नागालैंड के इस 'खोनोमा गाँव' के लोग वर्षों से स्वच्छता के प्रति जागरूक हैं। 'खोनोमा यूथ आर्गेनाइजेशन' के गठन से पूर्व भी यहाँ के बच्चे एवं युवा स्वच्छता के प्रति जागरूक थे। इस गाँव के बच्चे एवं युवा समय मिलते ही साफ-सफाई से जुड़ जाते हैं।

खोनोमा भले ही एक गाँव है लेकिन यहाँ तमाम तरह की सुविधाएँ उपलब्ध हैं जिसकी वजह से यह गाँव धीरे-धीरे ही सही, पर विकास के पथ पर चल पड़ा है। वर्तमान समय में इस गाँव में **6** विद्यालय है। इस गाँव के लगभग सभी बच्चे विद्यालय जाते हैं। इस तरह सामुदायिक सहभागिता का ही परिणाम है कि इस गांव में पूरे भारत से पर्यटक पहुँच रहे हैं। इसके साथ-साथ 'इको मैनेजमेंट कमेटी' द्वारा पर्यटन हेतु खास ध्यान दिया जा रहा है एवं इसके अतिरिक्त इस गाँव के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा पर्यटकों का खास ख्याल रखा जा रहा है। इस तरह एक छोटे से गाँव ने यह साबित कर दिया है कि सामुदायिक पहल से भी विकास संभव है।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के अनुसार भारत गाँवों में ही बसता है। आज इस आधुनिक दौर में सभी ग्रामवासियों के अथक प्रयास के कारण खोनोमा गाँव ने हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के सपने को साकार करने में अहम भूमिका निभाई है। ऐसे गांववासियों को पाकर खोनोमा गांव की मिट्टी धन्य हो गई है। आखिर में, हम सभी भारतीयों को आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में भारत के सभी गांव "खोनोमा" जैसे हरित ग्राम होने का गौरव प्राप्त करेंगे एवं पूर्ण रूप से समृद्ध हो जाएंगे।

सभी सुधी पाठकों को धन्यवाद।

करुणा–धारा

□ **श्री प्रियतोष चौधुरी**
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

चंपा के लिए आज बहुत खुशी का दिन है। चंपा का बहुत दिन से सपना था कि वह एक बार अमरनाथ दर्शन करने के लिए जाए। आज वह दिन आ गया। सारे लोग चंपा को चंपाबाई के नाम से जानते थे। चंपा लखनऊ में चंपाबाई बनकर रहती थी। चंपा कभी चंपाबाई बनाकर रहना नहीं चाहती थी। लेकिन परिस्थितियों से विवश होकर चंपाबाई बन गई थी। जब चंपा छोटी थी तो वह सपना देखा करती थी कि एक दिन वह बड़ी होकर पढ़ लिखकर अधिकारी बनेगी। लेकिन बचपन में ही उसकी शादी हो गई। फिर चंपा को पारिवारिक सुख भी नहीं मिला और वह चंपाबाई बन गई। एक दिन अचानक उसकी मुलाकात बचपन की सहेली से हो गई और उसे मालूम हुआ कि उसकी सहेली अनारकली सपरिवार संग अमरनाथ दर्शन करने जा रही है। चंपा ने अपनी सहेली के साथ अमरनाथ यात्रा के लिए ट्रेन की टिकट आरक्षित करवा ली। जिस दिन जाना था उस दिन तीन घंटे पूर्व ही चंपा तैयार हो कर स्टेशन पर पहुँच गई थी। फिर अनारकली भी स्टेशन पर अपने पति के साथ आई। ट्रेन लखनऊ से निर्धारित समय पर रवाना हुई। दो दिनों के बाद ट्रेन जम्मू स्टेशन पर पहुंची। फिर सभी ने कुछ खा पीकर आगे की यात्रा बस से पूरी की। बस से कश्मीर पहुंचे। बस ने उन्हें जहां उतारा था वहाँ से अमरनाथ की दूरी लगभग **15** किलोमीटर थी। अब आगे की यात्रा पैदल ही तय करनी थी। रास्ते में बड़े-बड़े पर्वतों को पैदल ही पार करना था। फिर सभी ने भोजन करके थोड़ा सा विश्राम किया और फिर अमरनाथ जी के दर्शन के लिए निकल पड़े। यह लोग जब बरारी पहुंचे तब अंधेरा हो गया था। रात के समय सभी लोग बरारी में ही रुक गए। फिर तभी अचानक चंपा की तबीयत खराब हो गई। चंपा को तेज बुखार आ गया था।

सुबह चंपा ने अपनी सहेली से कहा आप लोग जाइए मैं थोड़ी देर बाद आऊँगी। बरारी से अमरनाथ मंदिर की दूरी अधिक नहीं है फिर भी रास्ते में ऊंचे-ऊंचे पर्वत है जिसे पैदल ही पार करना था। फिर धीरे-धीरे चंपा का बुखार ठीक हुआ। फिर वह अकेले ही अमरनाथ दर्शन हेतु निकल पड़ी। शाम होने को आई। रास्ते में चंपा अपनी सहेली से मिलती है, वे लोग दर्शन करके वापस लौट रहे थे। फिर चंपा जब तक मंदिर के पास पहुंची तब तक मंदिर का दरवाजा बंद हो चुका था। फिर चंपा मंदिर के पुजारी से मिलती है। वे घर जा रहे थे। पुजारी जी ने कहा कि अब मंदिर अगले छह महीने के बाद ही खुलेगा। यह सुन कर चंपा रोने लगी और रोते-रोते बेहोश हो गई। उसे कुछ भी नहीं याद था। जब चंपा को होश आया था तो वह पुजारी जी को देखती है। पुजारी जी को विश्वास नहीं हो रहा था कि वह कैसे इतनी भीषण ठंड में इतने दिनों तक यहाँ रह गई। चंपा ने उठ कर देखा की मंदिर का दरवाजा खुल चुका था। पुजारी जी मन ही मन सोच रहे थे कि कैसे प्रभु ने छह महीने के दिन-रात को एक रात में ही पूरा कर दिया। इस घटना के बाद पुजारी जी ने भगवान और चंपाबाई दोनों को प्रणाम किए और आने वाले अन्य श्रद्धालुओं को यह कथा सुनाने लगे।

प्लास्टिक हटाओ, धरती बचाओ

□ **श्रीमती स्निग्धा फुकन**
हिन्दी अधिकारी

अतीत में केवल स्थानीय प्रदूषण को समस्या माना जाता था। उदाहरण के लिए कोयले के जलाने से उत्पन्न धुआँ, अत्यधिक सघन होने पर प्रदूषक बन जाता है, जो कि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। पर्यावरण के किसी भी तत्व में होने वाला अवांछनीय परिवर्तन, जिससे जीव जगत पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, उससे प्रदूषण कहलाता है। पर्यावरण प्रदूषण में मानव की विकास प्रक्रिया तथा आधुनिकता का महत्वपूर्ण योगदान है। यहाँ तक मानव की वे सामान्य गतिविधियाँ भी प्रदूषण कहलाती हैं, जिनसे नकारात्मक परिणाम मिलते हैं।

प्रदूषण दो प्रकार का हो सकता है। स्थानीय तथा वैश्विक। जैसे समुद्र के किनारे तथा झीलों में उगने वाली वनस्पति शैवाल आदि जो कि प्रदूषण का कारण है। भारी तत्व जैसे लैड और मरकरी का जियोकैमिकल चक्र में अपना स्थान है। इनकी खुदाई होती है और इनकी उत्पादन प्रक्रिया कैसी है उस पर निर्भर करेगा कि वे पर्यावरण में किस प्रकार सघनता से जाते हैं। जैसे इन तत्वों का पर्यावरण् में मानवीय निस्तारण प्रदूषण कहलाता है। वैसे ही प्रदूषण, देशज या ऐतिहासिक प्राकृतिक भू-रासायनिक गतिविधि से भी पैदा हो सकता है।

'ग्रीन हाउस' प्रभाव पैदा करने वाली गैसों में वृद्धि के कारण भू-मण्डल का तापमान निरन्तर बढ़ रहा है। जिससे हिमखण्डों के पिघलने की दर में वृद्धि होगी तथा समुद्री जलस्तर बढ़ने से तटवर्ती क्षेत्र, जलमग्न हो जायेंगे। परम्परागत रूप से प्रदूषण में वायु, जल, रेडियोधर्मिता आदि आते हैं। यदि इनका वैश्विक स्तर पर विश्लेषण किया जाए तो इसमें ध्वनि, प्रकाश आदि के प्रदूषण भी सम्मिलित हो जाते हैं। गम्भीर प्रदूषण उत्पन्न करने वाले मुख्य स्रोत हैं, रासायनिक उद्योग, तेल रिफायनरीज, आणविक अपशिष्ट स्थल, कूड़ा घर, प्लास्टिक उद्योग, कार उद्योग आदि। आणविक संस्थान, तेल टैंक, दुर्घटना होने पर बहुत गम्भीर प्रदूषण पैदा करते हैं। प्रदूषक विभिन्न प्रकार की बीमारियों को जन्म देते हैं। जैसे कैंसर, इलर्जी, अस्थमा, प्रतिरोधक बीमारियाँ आदि। जहाँ तक कि कुछ बीमारियों को उन्हें पैदा करने वाले प्रदूषक का ही नाम दे दिया गया है। वर्तमान में प्लास्टिक प्रदूषण एक गंभीर वैश्विक समस्या बन गया है। दुनिया भर में अरबों प्लास्टिक के बैग हर साल फेंके जाते हैं। ये प्लास्टिक बैग नालियों के प्रवाह को रोकते हैं और आगे बढ़ते हुए वे नदियों और महासागरों तक पहुंचते हैं। चूंकि प्लास्टिक स्वाभाविक रूप से विघटित नहीं होता है, इसलिए यह प्रतिकूल तरीके से नदियों, महासागरों आदि के जीवन और पर्यावरण को प्रभावित करता है। प्लास्टिक प्रदूषण के कारण लाखों पशु और पक्षी वैश्विक स्तर पर मारे जाते हैं, जो पर्यावरण संतुलन के मामले में एक अत्यंत चिंताजनक पहलू है। यह गहरी चिंता का विषय है कि फिलहाल लगभग **1500** मिलियन टन का प्लास्टिक पूरे ग्रह पर एकत्र हो गया है जो लगातार पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता है। आज प्रति व्यक्ति के प्लास्टिक का उपयोग लगभग **18** किलोग्राम है जबकि इसकी रीसाइक्लिंग केवल प्रायः **15.2** प्रतिशत है। इसके अलावा प्लास्टिक रीसाइक्लिंग इतना सुरक्षित नहीं माना जाता है क्योंकि प्लास्टिक के रीसाइक्लिंग के माध्यम से अधिक प्रदूषण फैलता है। आज हर जगह प्लास्टिक दिखता है जो पर्यावरण को दूषित कर रहा है। एक अनुमान के मुताबिक भारत में लगभग **10** से **15** हजार यूनिट पॉलीथीन का उत्पादन हो रहा है। वर्ष **1990** के आंकड़ों के मुताबिक देश में इसकी खपत बीस हजार टन थी जो अब लगभग तीन से चार लाख टन तक पहुंच गई है - यह भविष्य के लिए एक अशुभ संकेत है। चूंकि पॉलीइथीलीन परिसंचरण में आया तो सभी पुराने पदार्थ अप्रचलित हो गए क्योंकि कपड़ा, जूट और पेपर को पॉलीथीन द्वारा बदल दिया गया था। पॉलीथीन निर्मित वस्तुओं का उपयोग करने के बाद फिर से इनका उपयोग नहीं किया जा सकता इसलिए उन्हें फेंक दिया जाना चाहिए। प्लास्टिक अपशिष्ट कई जहरीली गैसों का उत्पादन करता है। परिणामस्वरूप गंभीर वायु

प्रदूषण का उत्पादन होता है जो कैंसर को बढ़ावा देता है, शारीरिक विकास को रोकता है और भयंकर बीमारी का कारण बनता है। गड्ढों में प्लास्टिक के कारण पर्यावरण खराब हो जाता है, मिट्टी और भूजल विषाक्त हो जाते हैं और धीरे-धीरे पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ना शुरू हो जाता है। प्लास्टिक उद्योग में काम करने वाले श्रमिकों के स्वास्थ्य की भी एक सीमा होती है जो विशेष रूप से उनके फेफड़े, किडनी और तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करती है। यद्यपि प्लास्टिक निर्मित सामान गरीब और मध्यम वर्ग के लोगों की जिंदगी की गुणवत्ता में सुधार करने में सहायक होते हैं, पर साथ ही वे इसके लगातार उपयोग से उत्पन्न खतरे से अनजान हैं। प्लास्टिक एक ऐसी वस्तु बन गई है जो पूजा, रसोईघर, बाथरूम, बैठक कमरे और पढ़ने के कमरे में इस्तेमाल होने लगा है। इतना ही नहीं अगर हमें बाजार से राशन, फलों, सब्जियां कपड़े, जूते, दूध, दही, तेल, घी और फलों का रस आदि जैसे किसी भी वस्तु को लेकर आना पड़े तो पॉलीथीन का व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाता है। आज की दुनिया में बहुत सारे फास्ट फूड है जिन्हें पॉलिथीन में पैक किया जाता है। आदमी इतना प्लास्टिक का आदी बन गया है कि वह जूट या कपड़े से बने बैग का उपयोग करना भूल गया है। दुकानदार भी हर प्रकार के पॉलीथीन बैग रखते हैं क्योंकि ग्राहक ने पॉली को रखना अनिवार्य बना दिया है। ऐसा चार से पांच दशक पहले नहीं था जब बैग कपड़े, जूट या कागज से बने बैग इस्तेमाल में लाए जाते थे जो पर्यावरण के लिए फायदेमंद थे। प्लास्टिक प्रदूषण पर्यावरण के लिए एक गंभीर खतरा है। वैज्ञानिक, वर्षों से इसके प्रतिकूल प्रभावों के बारे में चेतावनी देते रहे हैं। यह समस्या इसलिए भी विशेष रूप से गंभीर है क्योंकि विभिन्न व्यापक-प्रचारित स्वच्छता अभियान के बावजूद प्लास्टिक कचरे से कुछ भी अछूता नहीं है। इसने गांवों, कस्बों, शहरों, महानगरों यहां तक कि देश की राजधानी को भी नहीं छोड़ा बावजूद इस तथ्य के यह कि पॉलीथीन का उपयोग निषिद्ध है। यह समाज का कर्तव्य है कि वे इस कहावत को सही साबित करें कि प्रकृति भगवान का अनोखा उपहार है। इसलिए लोगों को पॉलीथीन की वजह से प्रदूषण को रोकने के लिए आगे आना होगा और हर किसी को अपने स्तर पर इसका निपटान करने में शामिल होना होगा। चाहे वह बच्चा हो या बुजुर्ग, शिक्षित हो या अशिक्षित, समृद्ध हो या गरीब, शहरी हो या ग्रामीण सभी को प्लास्टिक के खतरे से छुटकारा पाने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। परिवार के बुजुर्गों को पॉलीथीन का उपयोग नहीं करना चाहिए और अन्य सभी सदस्यों को इसका प्रयोग करने से भी रोकना चाहिए। इसके अलावा यदि आप इसके बारे में लोगों को उचित जानकारी प्रदान करते हैं, तो यह पॉलीथीन के इस्तेमाल को रोकने का सबसे बड़ा कदम होगा। जब आप बाजार में खरीदारी करते हैं तो अपने साथ कपड़े से बना एक जूट या बैग ले लीजिए और अगर दुकानदार पाली बैग देता है तो उसे पेश करने से प्रबल होता है। अगर उपभोक्ताओं ने इसे बंद कर दिया है तो इसकी आवश्यकता दिन-प्रति दिन कम हो जाएगी और एक समय आएगा जब पर्यावरण से पॉलीथीन का सफाया हो जाएगा। सरकारी मशीनरी को भी पॉलीथीन के निर्माण में लगे इकाइयों को बंद करना होगा। प्रदूषण, तत्वों या प्रदूषकों के वातावरण में मिश्रण को कहा जाता है। जब यह प्रदूषक हमारे प्राकृतिक संसाधनो में मिल जाते है। तो इसके कारण कई सारे नकरात्मक प्रभाव उत्पन्न होते है। प्रदूषण मुख्यतः मानवीय गतिविधियों द्वारा उत्पन्न होते है और यह हमारे पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करता है। प्रदूषण के द्वारा उत्पन्न होने वाले प्रभावों के कारण मनुष्यों के लिए छोटी बीमारियों से लेकर अस्तित्व संकट तक जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। हमें पहले यह जानना जरुरी है कि हमारी किन-किन गतिविधियों के कारण प्रदूषण दिन पर दिन बढ़ रहा है और पर्यावरण में असंतुलन फैला रहा है।

प्रदूषण को रोकना बहुत अहम है। पर्यावरणीय प्रदूषण आज की बहुत बड़ी समस्या है, इसे यदि समय पर नहीं रोका गया तो हमारा समूल नाश होने से कोई भी नहीं बचा सकता। पृथ्वी पर उपस्थित कोई भी प्राणी इसके प्रभाव से अछूता नहीं रह सकता। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी आदि सभी का जीवन हमारे कारण खतरे में पड़ा है। इनके जीवन की रक्षा भी हमें ही करनी है। इनके अस्तित्व से ही हमारा अस्तित्व संभव है। आज के दौर में दुनिया का सबसे बड़ा पर्यावरण संकट प्लास्टिक

प्रदूषण है, जो समुद्री जीवन, जन-जीवों और इंसानी आबादी पर भी असर डाल रहा है। प्लास्टिक को प्रतिबंधित करने के साथ विभिन्न स्वच्छता मुहिम के साथ, कई देश इस समस्या के समाधान के लिए कदम उठा रहे हैं। आइए देखते हैं कैसे कुछ देश इस वैश्विक संकट से निपट रहे हैं और धरती को नुकसान पहुंचा रहे, प्लास्टिक प्रदूषण को कम करने की सजग कोशिश कर रहे हैं। प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का जमीन या जल में इकट्ठा होना प्लास्टिक प्रदूषण कहलाता है जिससे वन्य जन्तुओं, या मानवों के जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। प्लास्टिक प्रदूषण पर प्रतिकूल वन्य जीवन, वन्यजीव निवास स्थान को प्रभावित करता है कि वातावरण में प्लास्टिक उत्पादों के संचय करना शामिल है। कई प्रकार के और प्लास्टिक प्रदूषण के रूपों में मौजूद हैं। प्लास्टिक प्रदूषण पर प्रतिकूल भूमि, जलमार्ग और महासागरों को प्रभावित कर सकते हैं। प्लास्टिक में कमी के प्रयासों प्लास्टिक की खपत को कम करने और प्लास्टिक रीसाइक्लिंग को बढ़ावा देने के प्रयास में कुछ क्षेत्रों में हुई है। प्लास्टिक प्रदूषण की प्रमुखता प्लास्टिक मनुष्यों द्वारा इस्तेमाल प्लास्टिक के उच्च स्तर को उधार देता है, जो सस्ती और टिकाऊ होने के साथ जोड़ा जाता है। प्लास्टिक हटाओ, धरती बचाओ। प्लास्टिक हटाएँ जीवन बचाएँ, धरती को स्वच्छ बनाएँ। कदम-कदम से प्लास्टिक हटा कर, धरती को स्वर्ग बनाने का समय आ गया है । प्लास्टिक हटाना है, पर्यावरण को सुरक्षित बनाना है। कपड़े और जूट के बैग को अपनाना है, प्लास्टिक को हटाना है। प्लास्टिक बैग को हटाना है, ये बात सबको समझाना हैं। धरती हमारी माँ है, प्लास्टिक से इसे बचाना है। आज से ही प्लास्टिक को न कहे और स्वास्थ्य के खतरों को कम करें। प्लास्टिक हटाओ, जीवन बचाओ। प्लास्टिक को आज से ही अपने जीवन से हटाएं और पर्यावरण और धरती को स्वच्छ बनाएं। आज से ही हम सभी मिलकर यह कसम खाएँ, सभी मिलकर अब प्लास्टिक को दूर भगाये। प्लास्टिक एक मददगार हाथ हैं, लेकिन वे हमारे देश को प्रदूषित कर रहे हैं। भारत के विकास से अपना नाता जोड़े, पॉलीथीन के प्रयोग को अब छोड़ो। प्लास्टिक जब जल में मिल जाता है, प्लास्टिक जल को यह जहर बनाता है, जिससे जल में बसे जीवन खतरे में पड़ जाते हैं। प्लास्टिक हमारा अंत कठोर बना देगा। पॉलीबैग नहीं है हमारा दोस्त, गन्दगी और बीमारी का यह है मुख्य स्त्रोत। आओ ऐसा स्वच्छ भारत बनाएँ, जिसमें प्लास्टिक को हमेशा के लिए दूर भगाएँ।

(इंटरनेट से संग्रहित)

आह्वान

□ **सुश्री प्रीति जोशी**
पुत्री - श्री कृष्णा जोशी
एम.टी.एस

कन्या भ्रूण हत्या है अपराध, अपराध ही नहीं यह है महापाप।
क्यों करते हो भ्रूण हत्या सोचो, क्या यही है तुम्हारा इतिहास।
किसने किया विवश तुम्हें, क्यों रहे हो मौजे मार।
क्या कभी यह पाप मिटेगा, माँ तुमसे पूछूं यही सवाल।
क्यों नहीं मिलेगा माँ तुम्हें, इस परिवार में अपनों का प्यार।
तेरी बेटी पूछे तुमसे, हरदम बस यही सवाल।
हे, माँ सुनलों मेरी पुकार, और आज ही बदल दो अपना विचार।
अपनी सोच बदल कर, समाज समाज में तुम करो सुधार।
तुम क्यों नहीं जाते अपने अतीत में, कितना सुंदर था वह संसार।
लड़की होती थी कन्या और माता देवी का अवतार।
क्योंकि आज के युग में कन्या ही है, सभ्य समाज का आधार।
फिर क्यों छीने मुझको तुमसे माँ, ये अपराधियों का संसार।
अभी विचारों, जानों और पहचानों माँ तुम अपना अधिकार।
आज बचा लो माँ मेरा जीवन, मेरी है बस यही पुकार।
मुझे मारकर क्या तुम अपने पाप छिपा पाओगी।
क्योंकि आपके मन में गूंजेगे, मेरे प्रेम भरे चित्कार।
माँ तुम संवारों मेरा जीवन, यही है आपके सुख का आधार।
जीवन के हर क्षण क्षण में, मैं रहूँगी आपके साथ।

हर सदियों का एक दर्द

□ **श्रीमती मंजिता राय चौधुरी**
सहायक लेखा अधिकारी

अचानक से पलट गया,
दुनिया का बही खाता।
जो थी मेरी बचपन की सुनी सुनाई कहानी,
आज उसी ने बढ़ा दिया है बेचैनी।

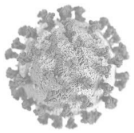

हर सदियों में एक बार आती है महामारी,
जो मनुष्य के ऊपर पड़ती है भारी।
आज है संकट की घड़ी,
कोविड-**19** बना है दुनिया के लिए महामारी।

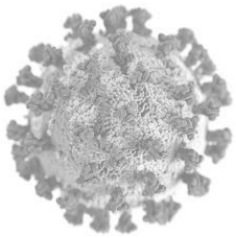

दुनिया ने सीखी आज नई-नई शब्दावली,
कोरेंटाइन, सोशल डिस्टेन्सिंग और दो गज की दूरी।
दो गज की दूरी हुई बहुत जरूरी,
तालाबंदी जीवन जीना हुई हम सब की मजबूरी।

जानी पहचानी धरती माँ के रूप में हुआ परिवर्तन,
जब देखो, जहां देखों, बस है उदास मन।
हर शहर, हर गाँव, हर मुहल्ला आज पड़ा है वीरान,
चारों तरफ छा गई है बर्बादी का निशान।

जीवन जीविका पर टूटा है कहर,
चारों ओर बर्बादी और तबाही का है मंजर।
भाग-दौड़ की जिंदगी में ठहराव आ गया है,
अचानक सब खुशियाँ गायब हो गई हैं।

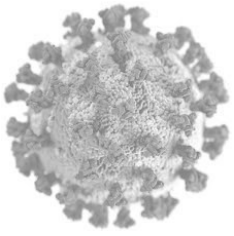

मज़दूर कर रहें हैं शहर से पलायन,
देख न पाऊँ विचलित करें मन।
ईश्वर से करो आज एक ही प्रार्थना,
धरती से शीघ्र समाप्त हो जाए यह करोना।

डिजिटल मार्केटिंग

□ **श्री पार्थ ज्योति दे**
सहायक लेखा अधिकारी

अपनी वस्तुएं और सेवाओं की डिजिटल साधनो से मार्केटिंग करने की प्रक्रिया को डिजिटल मार्केटिंग कहते है। डिजिटल मार्केटिंग इंटरनेट के माध्यम से करते हैं। इंटरनेट, कंप्यूटर, मोबाइल फोन, लैपटॉप, वेबसाइट विज्ञापन या किसी और एप्लिकेशन द्वारा हम इससे जुड़ सकते हैं।

पहले हर बड़ी कंपनी अपने विपणन अभियान चलने के लिए दूरदर्शन, समाचार पत्र, पत्रिका, रेडिओ, पोस्टर और बेनर जैसे संसाधनों का प्रयोग करती थी और बहुत सारी कंपनियां घर-घर जाकर अपने उत्पाद के बारे में बताती थी। परन्तु अब समय के साथ विपणन करने के तरीकों में परिवर्तन हो चुका है। डिजिटल मार्केटिंग नये ग्राहकों तक पहुंचने का सरल माध्यम है। इसे ऑनलाइन मार्केटिंग भी कहा जा सकता है। कम समय में अधिक लोगों तक पहुंच कर विपणन करना डिजिटल मार्केटिंग है। डिजिटल मार्केटिंग से उत्पादक अपने ग्राहक तक पहुंचने के साथ ही साथ उनकी गतिविधियों, उनकी आवश्यकताओं पर भी दृष्टि रख सकता है। सरल भाषा में कहें तो डिजिटल मार्केटिंग डिजिटल तकनीक द्वारा ग्राहकों तक पहुंचने का एक सरल माध्यम है।

दुनिया की आधे से ज्यादा जनसंख्या इंटरनेट का इस्तेमाल करती है और यह आंकड़े प्रतिदिन बढ़ते जा रहे है। यही कारण है कि डिजिटल मार्केटिंग का विस्तार बहुत तेजी से हो रहा है। जनता अपनी सुविधा के अनुसार इंटरनेट के जरिए अपना मनपसंद व आवश्यक सामान आसानी से प्राप्त कर सकती है । अब कोविड-**19** महामारी के कारण लोग बाजार जाने से बचते हैं, ऐसे में डिजिटल मार्केटिंग बिजनेस को अपने उत्पाद और सेवा लोगो तक पहुंचाने में मदद करती है। डिजिटल मार्केटिंग कम समय में एक ही वस्तु के कई प्रकार दिखा सकती है और उपभोक्ता को जो उत्पाद पसंद है वे तुरंत उसे ले सकता है। इस माध्यम से उपभोक्ता का बाजार जाना, वस्तु पसंद करने, आने जाने में जो समय लगता है वो बच जाता है ।

ये वर्तमान काल में आवश्यक हो गया है । व्यापारी को भी व्यापार में मदद मिल रही है। वो भी कम समय में अधिक लोगो से जुड़ सकता है और अपने उत्पाद की खूबियाँ उपभोक्ता तक पहुँचा सकता है। व्यापारी को भी यह सोचना नही पड़ता कि वह अखबार, पोस्टर, या विज्ञापन का सहारा ले। सबकी सुविधा के मद्देनजर इसकी माँग है। लोगों का विश्वास भी डिजिटल मार्किट की ओर बढ़ रहा है। यह एक व्यापारी के लिये हर्ष का विषय है। कहावत है "जो दिखता है वही बिकता है" - डिजिटल मार्किट इसका अच्छा उदाहरण है।

खुद से प्यार करो

□ **श्रीमती मेघा रानी प्रसाद**
पत्नी- श्री भागीरथ प्रसाद, डी.ई.ओ

तुम हर काम में अपना बेस्ट देते हो,
पर, रिजल्ट कभी तुम्हारे हक में आता ही नहीं
फिर सोचने लगते हो कि,
शायद मुझमें ही कोई कमी है,
खुद से ही नफरत होने लगती है,
फिर खुद पे खुश हुआ जाता ही नहीं।
ज्यादा लोग भी नहीं है तुम्हारे साथ,
कहने को दोस्त भी नहीं है उतने पास,
जिस चीज पर तुम्हारा वश नहीं है,
उसके पीछे क्यों पड़े रहते हो,
फिर उसी के बारे में सोच सोच कर,
उदास बैठे रहते हो।
दूसरे को देख कर भी,
तुम्हें नीचा सा महसूस होता हैं,
क्योंकि खुद में तो केवल,
कमियां ही नजर आती है,
खुद को भी एकदम,
हारा हुआ समझ के रखा है।
खुद को पसंद करने की फिर,
वजह भी नहीं मिल पाती
लेकिन खुश रहने का,
एक तरीका बहुत आसान होता है,
दूसरों को बाद में,
पहले खुद से प्यार करना होता है।
समझो खुद को और,
अपने आप को दर्द देना बंद करो,
दुनिया अपने आप पसंद आ जाएगी,
पहले खुद को पसंद करो ।।

हिवरे बाजार

□ **श्री पुरूषोत्तम गिरि**
कनिष्ठ अनुवादक

इस आलेख के माध्यम से आज 'हिवरे बाजार' की यात्रा करते हैं।

क्यों ?

क्योंकि इस गांव में कदम रखते ही हम सभी को यह एहसास होगा कि हम किसी गांव में नहीं बल्कि अपने सपनों के भारत का दर्शन कर रहे हैं। एक ऐसा गांव जहाँ पूरी तरह स्वच्छ है। एक ऐसा गांव जहाँ कोई भी व्यक्ति नशा आदि नहीं करता है। एक ऐसा गांव जहाँ कोई भी व्यक्ति शराब का सेवन नहीं करता है। एक ऐसा गांव जहाँ से अब कोई भी शहरों के लिए पलायन नहीं करता है। एक ऐसा गांव जहाँ कोई भी बच्चा कुपोषित नहीं है। एक ऐसा गांव जिसे जल संरक्षण हेतु राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। एक ऐसा गांव जहाँ सत्ता एवं नीतियाँ सरकार द्वारा नहीं अपितु गांव के सभी लोगों द्वारा संचालित की जाती हैं।

यह सभी सपने जैसा ही है।

लेकिन यह सपना भी साकार हुआ है, महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के 'हिवरे बाजार गांव' में।

यह 'हिवरे बाजार गांव' की कहानी है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के सपनों का यह गांव है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी कहते थे, भारत अपने गांव में ही बसता है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के इस कथन को सच साबित कर रहा है, महाराष्ट्र का यह 'हिवरे बाजार गांव'।

पहले से 'हिवरे बाजार गांव' की यह आदर्श स्थिति नहीं थी। सन् **1990** से पहले यह हिवरे बाजार गांव घोर अभाव एवं बदहाली से गुजर रहा था। उस दौरान यह गांव सूखे के भयंकर चपेट में था। इस गांव में कम बारिश के कारण सभी फसलें पूरी तरह से बर्बाद हो जाती थी। पूरा गाँव सूखे के कारण बंजर सा हो गया था। यहाँ जमीन के रूप में ज्यादातर सह्याद्री की पहाड़ियां और चट्टानें हैं। इसके अलावा यहां बारिश भी कम होती है। बारिश की कमी के कारण पहाड़ों के जंगल पूरी तरह से सूख चुके थे। हरियाली समाप्त हो गई थी। गांव के किसानों के लिए मवेशियों हेतु चारा जुटाना असंभव सा हो गया था। जल के अभाव में किसान बहुत ही परेशान थे और साथ ही साथ गांव में रोजगार के सभी अवसर समाप्त होते जा रहे थे। रोजगार के लिए गांव के लोगों का पलायन शहरों की ओर होने लगा था। जो परिवार गांव में रह गए थे, शहर नहीं गए थे, वे सभी लाचार और मजबूर हो कर कृषि का कार्य छोड़कर देशी शराब बनाने लगे। इस तरह इस गांव की जीविकोपार्जन का साधन शराब के व्यवसाय बन गया था। यह गांव पूरे क्षेत्र में गलत कामों के लिए प्रसिद्ध हो गया था। कोई भी सज्जन व्यक्ति इस गांव में आना, ठहरना पसंद नहीं करता था। लेकिन कालांतर में ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था। इस गांव के ही कुछ नव युवकों ने यह प्रण लिया कि इस गांव को पूरे भारत वर्ष में आदर्श गांव बनाना है। उनका यह संकल्प दृढ़ संकल्प था। उसी दौरान गांव के युवकों द्वारा इस 'हिवरे बाजार गांव' को सुधारने और आदर्श गांव बनाने का सिलसिला शुरू हुआ। सभी गांव-वासियों ने निर्णय लिया कि सबसे पहले जल, जंगल और जमीन को सुधारना है।

सर्वप्रथम गांव के सभी लोगों ने जल संरक्षण पर कार्य शुरू किया। इसके लिए सभी ग्रामवासियों ने मिलकर पहाड़ियों से जल रोकने के लिए अथक परिश्रम करके छोटे छोटे नालों, गड्ढे और बांध बना कर जल को संरक्षित करने का कार्य किया।

फलस्वरूप जल पहाड़ों पर जमा होने लगा। जल संरक्षण से भू-स्खलन का भय भी समाप्त हो गया। मिट्टी में जल स्थिर होने से मिट्टी में नमी की मात्रा में वृद्धि हुई और इस तरह से कृषि के उत्पादन में भी उत्तरोत्तर वृद्धि होने लगी। गांव के सूख चुके कुओं में भी जल स्तर बढ़ा। जल संरक्षण की समुचित और वैज्ञानिक तरीकों से प्रबंधन के कारण सिंचाई के लिए जल की कमी की समस्या भी समाप्त हुई। इसके बाद गांव वासियों ने निर्णय लिया कि सिर्फ पीने के पानी के लिए ही नल की व्यवस्था की जाएगी। सिंचाई का कार्य सिर्फ कुओं के जल से ही किया जाएगा। इसका परिणाम यह हुआ कि जो जल स्तर **120** फुट नीचे चला जाता था आज वह **20** से **30** फुट तक ही स्थिर रहता है। इसके बाद गांव के सभी लोगों ने हरियाली के लिए पौधे रोपड़ का कार्य किया। गांव के लोगों के सामूहिक अथक प्रयासों से हजारों की संख्या में पेड़ पौधे लगाए गए और परिणामस्वरूप बंजर भूमि और पहाड़ फिर से हरे भरे हो गए। यह सब गांव के सभी लोगों के श्रमदान से ही संभव हुआ। गांव के सभी लोगों ने अपने रोजगार की चिंता किए बगैर अपने गांव के सुनहरे भविष्य के लिए दिन रात मेहनत करके गांव को आदर्श गांव बनाया। धीरे धीरे समय के साथ इस गांव की हालत सुधरते गई। चारों ओर हरियाली बढ़ी और परिणामस्वरूप गांव वाले शराब बनाने जैसी कुरीतियों को छोड़कर फिर से खेती एवं पशुपालन करना प्रारंभ कर दिया। पहले यहां वर्ष में एक ही फसल की खेती की जाती थी लेकिन आज भूजल स्तर सामान्य एवं स्थिर रहने के साथ मिट्टी में नमी रहने के कारण वर्ष में तीन फसलों की खेती की जा रही है। सभी गांव वालों ने मिलकर यह निर्णय लिया कि उन फसलों की खेती की जाएगी जिनमें पानी की खपत और जरूरत कम हो और साथ ही साथ आमदनी भी अधिक हो। हर बारिश के बाद सभी गांव वाले फसलों की खेती की योजना मिलकर तय करते हैं और प्याज, आलू, अन्य सब्जियाँ एवं फल फूल की खेती करते हैं। परिणामस्वरूप प्याज की खेती में अद्‌भुत वृद्धि हुई और सिर्फ प्याज की बिक्री से ही इस गांव में करोड़ों रुपये की आमदनी हुई।

इसके अतिरिक्त संतरे की खेती भी खूब की जा रही है। खेती ने अब इस 'हिवरे बाजार गांव' को सामाजिक ही नहीं बल्कि आर्थिक तौर पर भी मजबूत बना दिया है। पिछले दशकों में इस गांव से जो भी लोग रोजगार हेतु शहर चले गए थे, गांव में पानी की समस्या समाप्त होते ही वापस गांव लौट आए हैं और गांव में ही रोजगार के अलग अलग संभावनाओं को देखते हुए अनेक प्रकार के रोजगार की शुरुआत कर रहे हैं। इसके अलावा गांव वासियों ने गांव में वापस आई हरियाली की वजह से पुनः पशु-पालन और डेयरी व्यवसाय पर भी जोर देना शुरू कर दिया है। डेयरी व्यवसाय से भी इस गांव की आमदनी दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। डेयरी व्यवसाय में गांव के लोगों ने तकनीक का भी भरपूर इस्तेमाल कर रहे हैं जिससे गांव वासियों के समय में बचत भी हो रही है। डेयरी व्यवसाय से जुड़े सभी गांव वासियों को तकरीबन रोजाना **1200** से **2000** रुपये तक की आमदनी हो रही है। इस गांव में सहकारी डेयरी है। रोजाना सुबह सुबह गांव के लोग दूध लेकर सहकारी डेयरी में जाते हैं। वहां दूध की गुणवत्ता की जांच होती है और फिर उन्हें उनकी पर्ची के अनुसार रकम का भुगतान अविलंब ही कर दिया जाता है। यह डेयरी पूरी तरह से कंप्यूटरीकृत है। आज यह हिवरे बाजार गांव जल समस्या के समाधान के साथ ही साथ पशु पालन और पर्यावरण से संबंधित अपनी कई विकराल समस्याओं से निजात पा लिया है।

इस गांव में **1990** से पहले ज्यादातर परिवार गरीबी रेखा से नीचे थे लेकिन गांव वासियों की एकता और अथक प्रयासों और मेहनत के बाद इस गांव की तस्वीर अब पूरी तरह से बदल चुकी है। हम सभी भारतीयों के लिए यह प्रेरणा की बात है कि आज इस गांव में **270** परिवारों में से लगभग **80** परिवार ऐसे हैं जो करोड़पति हैं। आज इस गांव का कोई भी परिवार गरीबी रेखा से नीचे नहीं है। यह आँकड़े गांव की समृद्धि की कहानी बयां करने के लिए काफी है। आज इस गांव में आर्थिक संपन्नता है। रोजगार के कई सुनहरे अवसर हैं। अब इस गांव का कोई भी युवा रोजगार हेतु अपने

इस गांव से पलायन नहीं करता है। पहले इस गांव के प्राथमिक विद्यालय की स्थिति सोचनीय थी लेकिन गांव के सभी लोगों के सामूहिक प्रयासों से विद्यालय में कई नये नये कमरे बनाए गए हैं। इसके अलावा बच्चों के खेलने के लिए मैदान एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए सामुदायिक भवन का निर्माण किया गया है। ग्रामवासियों द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया गया है। ग्रामिणों और शिक्षकों ने मिलकर शिक्षा के लिए कई बेहतरीन कदम उठाए हैं। इन सभी कोशिशों के कारण अब इस गांव के प्राथमिक विद्यालय की तस्वीर पहले से पूरी तरह से बदल गई है। ग्रामीणों और शिक्षकों की निगरानी में इस विद्यालय में सभी बच्चों को दोपहर के समय पौष्टिक भोजन मुहैया करवाया जाता है। इसके अलावा इस गांव के विद्यालय में साफ सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाता है और साथ ही साथ इस विद्यालय शौचालाय की समुचित व्यवस्था की गई है। इस गांव के विद्यालय की प्रबंधन व्यवस्था से प्रभावित हो कर अन्य कई दूसरे गाँवों के विद्यार्थी यहां शिक्षा ग्रहण करने आते हैं। पहले सिर्फ प्राथमिक विद्यालय इस गांव में होने के कारण लड़कियाँ पढ़ाई छोड़ दिया करती थी लेकिन आज माध्यमिक विद्यालय के कारण इस गांव के अलावा दूसरे के गांव से भी लड़के लड़कियाँ **10**वीं तक की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त आधे एकड़ जमीन पर फैली आंगनबाड़ी भी है जहाँ छोटे बच्चों को खेलने के लिए खिलौने और सभी बच्चों को दोपहर भोजन हेतु साफ सुथरी बर्तनों की भी समुचित व्यवस्था की गई है। इस गांव के बच्चे कुपोषित नहीं हैं। यहाँ के इस आंगनबाड़ी को केन्द्र सरकार द्वारा पुरस्कृत भी किया गया है। इस 'हिवरे बाजार गांव' में स्वास्थ्य केन्द्र भी है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह गांव दूसरे गांव से श्रेष्ठ है। इस गांव के स्वास्थ्य केन्द्र के डाक्टर भी पूरी ईमानदारी से अपना कार्य करते हैं। इस गांव के प्रत्येक बच्चे का टीकाकरण होता है और साथ ही साथ गर्भवती महिलाओं का भी विशेष रूप से ध्यान रखा जाता है। स्थानीय स्तर पर मिलने वाली सभी स्वास्थ्य सेवाएं गांव के सभी लोगों के लिए उपलब्ध है। इस गांव के लोग सफाई और स्वच्छता को लेकर बहुत ही जागरूक हैं। इस गांव के लोगों ने अपने गांव की पंचायत का नाम "ग्राम संसद" रखा है जो अपने आप अद्‌भुत है। इस गांव में बैंक की एक शाखा भी है। गांव में ही बैंक होने की वजह से चाहे बात किसान क्रेडिट कार्ड लेने की हो या फिर ऋण लेने की हो, ग्रामवासियों को काफी सहूलियत है। इसके अलावा इस बैंक के परिसर में एटीएम की सुविधा भी उपलब्ध है। बैंक से गांव के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए ऋण आसानी से मिल जाता है। ग्रामवासियों के अलावा शिक्षा ग्रहण करते हुए सभी विद्यार्थी भी इस बैंक में खाताधारक हैं। आसपास के गांव वाले भी इस 'हिवरे बाजार गांव' में स्थित बैंक से सुविधा प्राप्त कर रहे हैं। इस बैंक के साथ गांव के लोगों का भी पूरा सहयोग रहता है। पानी, रोजगार, शिक्षा और पर्यावरण पर ध्यान देने के बाद ग्रामीणों ने स्वच्छता पर पूरी ईमानदारी से ध्यान दिया है। पूरे गाँव में कहीं भी कूड़ा नजर नहीं आता है। पूरे गांव में कहीं भी गंदगी नहीं है। नालियों की समुचित व्यवस्था की गई है। सड़कें भी साफ सुथरी है। यहाँ हम सभी भारतीयों को ध्यान देना चाहिए कि यह साफ सफाई सरकारी सुविधा पर आश्रित होने के बजाय इस गांव के सभी लोगों ने मिलकर स्वयं के प्रयास से संभव की है।

यहाँ यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इस गांव के लोगों ने जनजागरण की तरह इसे लिया है। बात चाहे अपने घर की हो या फिर गांव की हो, इस गांव के लोग साफ सफाई का काम रोजाना एक साथ मिलकर करते हैं। पूरे गांव में प्रत्येक परिवार के पास अपना शौचालय उपलब्ध है। इस गांव के सभी लोग चूंकि डेयरी व्यवसाय और पशुपालन से जुड़े हुए हैं तो राज्य सरकार ने बायोगैस की सुविधा यहाँ उपलब्ध करवाई है। पशुओं के गोबर से बायो गैस बनता है और गैस बनने के उपरांत बचे हुए कचरे का उपयोग इस गांव के किसान जैविक खेती में करते हैं। इस गांव के सभी घरों में एल.पी.जी गैस की सुविधाएं उपलब्ध है। जिससे इस गांव की महिलाओं को चूल्हा जलाने के लिए जंगल से लकड़ियां नहीं लानी पड़ती है और साथ ही साथ इससे महिलाओं के स्वास्थ्य पर भी चूल्हे के धुंओं का प्रतिकूल असर नहीं पड़ता है।

वनों का संरक्षण भी होता है। यह गांव हम सभी भारतीयों के लिए आदर्श गांव बन गया है। इस गांव की सफलताओं एवं संघर्षों की कहानी से सीख लेने के लिए पूरे भारतवर्ष से तमाम लोग रोजाना इस गांव में आ रहे हैं। वर्षो तक लगातार श्रमदान, ग्रामीणों की एकता, सरकारी पैसों का सही इस्तेमाल और पानी का लाजवाब, कुशल और जबरदस्त प्रबंधन ने इस 'हिवरे बाजार गांव' को हम सभी भारतीयों के समक्ष एक असाधारण मिसाल बना दिया है। एक समय था जब गांव के नौजवान अपना परिचय, अपने गांव का परिचय देते हुए घबराते थे, संकोच करते थे, कतराते थे लेकिन आज इस गांव के लोग पूरे भारतवर्ष में गर्व से कहते हैं कि वे 'हिवरे बाजार गांव' के निवासी हैं।

मैं तो बस इतना ही कहना चाहूँगा कि इस गांव के सभी लोगों के अथक प्रयास के कारण आज इस गाँव ने हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के सपने को साकार करने में अहम भूमिका निभाई है। ऐसे ग्रामवासियों को पाकर इस गांव की मिट्टी धन्य हो गई है। आखिर में, हम सभी भारतीयों को पूर्ण विश्वास है कि जल्द ही भारत के सभी गांव "हिवरे बाजार" जैसे समृद्ध हो जाएंगे।

धन्यवाद।

चाँदनी

□ श्री शंकर बी. थापा

उषा की पहली किरण के साथ,
चाँद की चाँदनी जैसे अस्पष्ट हो जाती है।
तुम्हारे आने से जीवन में वैसे ही,
प्रतिमा की आश गहराती है।
चाँद तो शीतलता मय,
देती है मधुरता के पल।
प्यार से घिरे प्यार का आश्रय,
शांति विश्राम के चरम स्थल।
पर फिर भी लोग भूल जाते है,
सूरज में सब घुल जाते है।
सबका अपना महत्व है,
किसी का अस्तित्व कम नहीं है।
उसकी अस्मिता का मोल क्या,
केवल उसका सौंदर्य ही नहीं।
उसकी सेवा भावना का,
कोई अंत नहीं।
कोई अंत नहीं।।

महिलाओं की गरिमा–सुरक्षा हेतु नियम

□ **श्रीमती शालिनी दहिया**
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

आधुनिक समय में महिलाओं को न केवल अपने कर्तव्यों अपितु अपने अधिकारों के बारे में भी भलीभांति सचेत होना चाहिए । स्मॉर्ट सिटी की तरह स्मॉर्ट महिला कर्मचारियों की निजी और सरकारी क्षेत्रों के कार्यालयों में बराबर मांग है । गए वो दिन, जब महिलाओं को कमतरी की नजरों से देखा जाता था। आज की नारी घर की दुविधाओं के साथ, कार्यालयीन कर्तव्यों का समान ऊर्जा और चतुराई से निर्वाह करती है ।

किंतु ऐसे समय में, कमोबेश ऐसी घटनाएं, अपितु दुर्घटनाएं घटती हैं, जिससे महिला कर्मचारियों का मनोबल गिराने और उनके कार्य-निष्पादन पर नकारात्मक प्रभाव डालने का प्रयास किया जाता है । प्रत्येक केंद्रीय सरकार में कार्य करने वाली महिला कर्मचारी की प्रतिष्ठा एवं आदर को कायम रखने हेतु कुछ ऐसे प्रावधान बनाए गए हैं, जिसकी संपूर्ण जानकारी उन्हें होनी चाहिए और ऐसे प्रावधानों एवं आदेशों का उचित प्रयोग करके तुच्छ मानसिकता वाले सहकर्मियों अथवा किसी भी अन्य निर्लज्ज व्यक्ति, जिनसे उनके मान एवं मर्यादा को हानि होने की संभावना है अथवा हानि होने के उपरांत, उनके ऊपर उचित कार्यवाही की जा सकती है ।

❖ सीमित ज्ञान एवं कुछ स्त्रोतों से ऐसे ही कुछ प्रावधानों का संकलन तैयार किया है, जो इस प्रकार हैः-

1. केंद्रीय सिविल सेवा (आचरण) नियम, **1964** के नियम **3**(ग) के अनुसारः-

   क. कार्य क्षेत्र में सरकारी कर्मचारी किसी महिला के साथ यौन-उत्पीड़न के कृत्यों में लिप्त नहीं होगा ।

   ख. कार्य प्रभारी अपने कार्य क्षेत्र में महिलाओं के साथ यौन-उत्पीड़न की घटनाओं की रोकथाम हेतु उचित कदम उठाएंगें।

2. विशाखा व अन्य बनाम राजस्थान राज्य व अन्य (नि. **1997**(**7**) उ.न्या. **384**) के प्रकरण में माननीय उच्चतम न्यायालय ने उपरोक्त मामलों से संबंधित दिशानिर्देश व मानदंड प्रदान किए हैं। कार्मिक व प्रशिक्षण विभाग के का.ज्ञ. सं.**11013/10/1997**-स्था.ए, दिनांक **13.02.1998** के माध्यम से ये मानदंड सभी मंत्रालयों व विभागों में प्रचालित किए गए थे, जिसकी एक प्रति www.persmin.nic.in पर भी उपलब्ध है । इसके मुख्य बिंदु हैः-

   क. जहां भी ऐसा उत्पीड़न, जो भारतीय दंड संहिता अथवा किसी भी अन्य विधि के अंतर्गत अपराध की श्रेणी में आता है, तो संबंधित प्राधिकार सक्षम प्राधिकार को विधिवत् शिकायत प्रस्तुत करने के साथ ही आवश्यक कार्यवाही करेगा।

   ख. एक शिकायत समिति, एक विशेष सलाहकार और गोपनीयता के संरक्षण सहित अन्य सहायता सेवाओं की

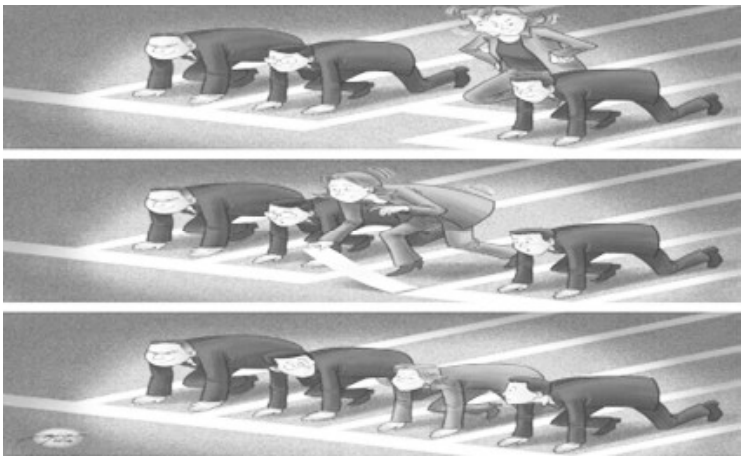

व्यवस्था होनी चाहिए ।

ग. शिकायत समिति की अध्यक्ष केवल एक महिला तथा समिति के आधे से अधिक महिला सदस्य होने चाहिए ।

घ. किसी भी अनावश्यक उच्च स्तरीय दबाव की संभावना के रोकथाम हेतु, एक तृतीय पक्ष, जैसे गैर-सरकारी संस्था अथवा अन्य समूह, जो यौन-उत्पीड़न के मुद्दे का जानकार है, को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए ।

ङ. जांच की साख को बनाए रखने हेतु, समिति की अध्यक्षता पर्याप्त उच्चता के पदाधिकारी द्वारा की जानी चाहिए।

च. प्रत्येक संगठन में, ऐसी शिकायतों की जांच हेतु एक स्थायी समिति का गठन होना चाहिए । ये समितियां प्राप्त शिकायतों व उनमें की गई कार्यवाई से संबंधित एक वार्षिक प्रतिवेदन को संबद्ध सरकारी विभाग को प्रेषित करेगी।

छ. भारत सरकार के सचिव, सह सचिव तथा समतुल्य स्तर के अधिकारियों के विरूद्ध शिकायतों की जांच हेतु, माननीय प्रधानमंत्री के अनुमोदन से कैबिनेट सचिवालय पृथक शिकायत समिति का गठन करेगा ।

ज. मेधा कोटवाल लेले व अन्य बनाम भारत संघ व अन्य (रिट याचिका सं.**173-177/1999**, दिनांक **26.04.2004**) के प्रकरण में उच्चतम न्यायालय ने यह निर्णय दिया कि शिकायत समिति के प्रतिवेदन को केंद्रीय सिविल सेवा नियमों के अंतर्गत प्राथमिक प्रतिवेदन नहीं, अपितु जांच प्रतिवेदन माना जाएगा ।

झ. अनुशासनात्मक प्राधिकार द्वारा शिकायत समिति को अग्रेषित शिकायत को आरोप पत्र माना जाएगा । शिकायतों के आधार पर, विशिष्ट आरोप पत्र भी तैयार किया जा सकता है ।

ञ. ऐसे प्रकरणों में, शिकायत की प्रक्रिया के निबटान हेतु शिकायत समिति ही सक्षम प्राधिकार होगा । तथापि, केंद्रीय सिविल सेवा नियम (वर्गीकरण, नियंत्रण व अपील) के अंतर्गत, शिकायत समिति के प्रतिवेदन को जांच प्रतिवेदन माना जाएगा और इस प्रतिवेदन के आधार पर केंद्रीय सिविल सेवा नियम (वर्गीकरण, नियंत्रण व अपील) के नियम **14** में प्रदत्त प्रक्रिया के अनुसार, जहां तक संभव हो, अनुशासनात्मक प्राधिकार कार्यवाही करेगा ।

ट. यौन उत्पीड़न की पीड़िता दोषी व्यक्ति अथवा स्वयं के स्थानांतरण के विकल्प का चुनाव कर सकती है ।

ठ. उपयुक्त कार्य परिस्थितियां, जैसे, कार्य, आराम, स्वास्थ्य और स्वच्छता सहित महिलाओं के लिए प्रतिकूल वातावरण प्रदान करना तथा किसी भी महिला कर्मचारी के पास यह मानने के उचित कारण न हो कि उसे अपनी नियुक्ति से संबंधित किसी भी प्रकार की हानि हो रही है ।

उपर्युक्त प्रावधान के स्त्रोतः कार्यक्षेत्र में महिला यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम, **2013**; कार्मिक व प्रशिक्षण विभाग के का.ज्ञ.सं. दिनांक **13.07.1999**, **02.02.2009**, **21.07.2009**, **03.08.2009**, **07.08.2009**, **12.12.2002** तथा कै.सचि. का.ज्ञ. **501/28/1/2008**-सी.ए.वी., दिनांक **26.09.2008** ।

3. संबंधित निर्णयः इस वर्ष उच्चतम न्यायालय में न्यायधीश डी.वाई. चंद्रचूढ़ व अजय रस्तोगी की न्यायपीठ ने यह कहा कि "कार्यक्षेत्र में यौन उत्पीड़न संविधान के अनुच्छेद **14** व **15** के अंतर्गत महिलाओं को समानता तथा अनुच्छेद

21 के अंतर्गत उनका किसी भी पेशे के उद्यम अथवा व्यवसाय या व्यापार करने के अधिकार का अपमान है ।"

❖ उपरोक्त प्रावधानों के अतिरिक्त भारतीय दंड संहिता सूचना तकनीकी अधिनियम, **2008** और अनुसूचित जाति-जनजाति (अत्याचार निवारण) की निम्नलिखित धाराओं के अंतर्गत न केवल महिला कर्मचारी, अपितु कोई भी सामान्य महिला अपनी गरिमा एवं मान-सम्मान की रक्षा हेतु उचित कानूनी संरक्षण प्राप्त कर सकती है:-

1. भारतीय दंड संहिता की धारा **507** के अनुसार, अनाम संसूचना द्वारा आपराधिक अभित्रास- "जो भी कोई अनाम संसूचना द्वारा या उस व्यक्ति का, जिसने धमकी दी हो, का नाम या निवास-स्थान छिपाने का पूर्वोपाय करके आपराधिक अभित्रास का अपराध करेगा, तो उसे इसे अपराध के लिए धारा **506** में उपबन्धित दंड के अतिरिक्त किसी एक अवधि के लिए कारावास जिसे दो वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है, से दंडित किया जाएगा ।"

✓ इस प्रावधान द्वारा प्रत्येक वह महिला, जो उत्पीड़न और ऑनलाइन धमकियों, विशेषतयाः गरिमा-हनन की स्थिति में, शिकायत दर्ज करवा सकती है ।

2. भारतीय दंड संहिता की धारा **499** के अनुसार, मानहानि- "जो कोई या तो बोले गए या पढ़े जाने के लिए आशयित शब्दों द्वारा या संकेतों द्वारा, या दृष्य रूपणों द्वारा किसी व्यक्ति के बारे में कोई लांछन इस आश्य से लगाता या प्रकाशित करता है कि जिससे उस व्यक्ति कि ख्याति को क्षति पहुँचे या यह जानते हुए या विश्वास करने का कारण रखते हुए ऐसे लांछन लगाता या प्रकाशित करता है, जिससे उस व्यक्ति की ख्याति को क्षति पहुँचे, तो तद्पश्चात अपवादित दशाओं के अतिरिक्त उसके द्वारा उस व्यक्ति की मानहानि करना कहलाएगा ।"

✓ पीड़ित महिलाएं मानभंग की स्थिति में इस धारा के अंतर्गत मानहानी का दावा प्रस्तुत कर सकती है ।

3. भारतीय दंड संहिता की धारा **509** के अनुसार, शब्द, अंगविक्षेप या कार्य जो किसी स्त्री की लज्जा का अनादर करने के लिए आशयित है- "जो कोई किसी स्त्री की लज्जा का अनादर करने के आशय से कोई ध्वनि या अंग विक्षेप करेगा, या कोई वस्तु प्रदर्शित करेगा, इस आशय से कि उस स्त्री द्वारा ऐसा शब्द या ध्वनि सुनी जाए, या ऐसा अंगविक्षेप या वस्तु देखी जाए, अथवा उस स्त्री की एकांतता का अतिक्रमण करेगा, तो उसे किसी एक अवधि के लिए साधारण कारावास की सजा जिसे तीन वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है, या आर्थिक दंड, या दोनों से, दंडित किया जाएगा ।"

✓ यह एक जमानती, संज्ञेय अपराध है और किसी भी मजिस्ट्रेट द्वारा विचारणीय है । इसके अंतर्गत पीड़ित महिला, जिसकी लज्जा का अनादर अथवा उसकी एकांतता का अतिक्रमण हुआ अथवा उसके शील के अपमान करने के उद्येश्य से कोई इशारा किया गया है, आदि स्थिति में शिकायत दर्ज करवा सकती है ।

4. निर्भया प्रकरण के उपरांत, कानूनों को और अधिक कड़ा बना दिया गयाः-

क. भारतीय दंड संहिता की धारा **354**क के अनुसार, "किसी भी महिला से अनिष्ट शारीरिक संपर्क और अग्रिम की प्रकृति का यौन उत्पीड़न या ऐसे पक्ष या निम्न चित्र आदि दिखाने के लिए मांग या अनुरोध, रंग की टिप्पणी आदि करने पर उसे किसी एक अवधि के लिए कारावास की सजा जिसे तीन वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है, या आर्थिक दंड, या दोनों से, दंडित किया जाएगा ।"

✓ पीड़िता उपरोक्त धारा में बताए गए कृत्यों के विरुद्ध शिकायत दर्ज करवा सकती है और यह अपराध समझौता करने योग्य भी नहीं है ।

ख. भारतीय दंड संहिता की धारा **354**घ के अनुसार, पीछा करना- "इस धारा के तहत किसी लड़की अथवा महिला का पीछा करना या महिला द्वारा इंटरनेट, ईमेल या इलेक्ट्रोनिक संसूचना के किसी अन्य प्रकार के प्रयोग का अनुवीक्षण करना या संपर्क या संपर्क करने का प्रयत्न करेगा, जैसे कृत्य शामिल हैं । जिसमें पहली बार अगर व्यक्ति दोषी पाया जाता है, तो उसको तीन वर्ष तक की सजा और जुर्माना हो सकता है और यदि वह व्यक्ति दूसरी बार इस तरह के कृत्य में दोषी पाया जाता है, तो उसे पाँच वर्ष तक की कैद और जुर्माना भी हो सकता है ।"

✓ पीड़िता उपरोक्त धारा में बताए गए कृत्यों के विरुद्ध शिकायत दर्ज करवा सकती है और यह अपराध समझौता करने योग्य भी नहीं है ।

5. सूचना तकनीकी अधिनियम, **2008** की धारा **66**ङ के अनुसार, **किसी की निजता भंग करने का दंड**- "जो भी जानबूझकर अथवा ज्ञात होने पर किसी व्यक्ति की निजी छवियों को उनकी सहमति के बिना, उनकी निजता को भंग करने की परिस्थिति में खिंचता है, छपाई अथवा हस्तांतरित करता है, को कारावास जिसे तीन वर्ष के लिए बढ़ाया जा सकता है अथवा दो लाख रूपए तक का जुर्माना, अथवा दोनों से दंडित किया जाएगा ।"

6. केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय ने अनुसूचित जाति-जनजाति (अत्याचार निवारण) संशोधन कानून, **2016** की **14** अप्रैल, **2016** की अधिसूचना द्वारा कुछ सुधार प्रस्तुत किए । इस संशोधन के द्वारा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अत्याचारों की रोकथाम हेतु निम्नलिखित प्रावधान प्रदत्त किए गए:-

क. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के शील अपमान करने के इरादे से किए गए कृत्यों अथवा पीछा करना जैसे गैर-आक्रामक अपराध मामलों में पीड़िता को **2** लाख रूपए का मुआवजा प्राप्त होगा और इसके लिए मेडिकल जांच की भी आवश्यकता नहीं होगी ।

ख. गंभीर प्रकृति के अपराधों, जैसे शील-भंग में पीड़िता को **5** लाख रूपए तथा सामूहिक शील-भंग व एसिड-हमले से चेहरा क्षतिग्रस्त होने पर राज्य सरकार से **8,50,000** रूपए की राहत राशि प्राप्त होगी ।

ग. ऐसे प्रत्येक कृत्य में पुलिस को **60** दिनों के भीतर आरोप पत्र जमा करना होगा तथा इसमें किसी भी प्रकार की देरी की स्थिति में, अधिकारियों को लिखित उत्तर प्रस्तुत करना होगा ।

दो शब्दः चूंकि शासकीय एवं कानूनी प्रावधान महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु बनाए गए हैं, तथापि साल दर साल ऐसी अवांछनीय दुर्घटनाएं बढ़ती जा रही हैं और पीड़िताओं को सामाजिक तिरस्कार का भी सामना करना पड़ता है । महिलाओं को सुरक्षित वातावरण देना प्रत्येक समाज और देश का कर्तव्य है और यदि यह नहीं मिलता तो महिलाओं को निडरतापूर्वक ऐसी स्थितियों का सामना करना चाहिए ।

शुभेच्छु !!!

(साभारः इंटरनेट व अन्य स्त्रोतों से संग्रहित सामग्री)

"हिन्दी दिवस 2019" के सुअवसर पर "स्वागत गीत" की प्रस्तुति की एक झलक।

"हिन्दी दिवस 2019" के सुअवसर पर एक "लघु हिन्दी नाटक" प्रस्तुति की एक झलक।

"हिन्दी दिवस 2019" के सुअवसर पर बच्चों द्वारा नृत्य प्रदर्शन की एक झलक।

"हिन्दी दिवस **2019**" के पावन अवसर पर प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय, विजयी प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए।

"हिन्दी दिवस **2019**" के पावन अवसर पर वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) महोदय, विजयी प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए।

"हिन्दी दिवस **2019**" के पावन अवसर पर उप महालेखाकार (ले.व ह. एवं वी.एल.सी), महोदय "सांस्कृतिक कार्यक्रम" के प्रतिभागी को पुरस्कार प्रदान करते हुए।

"हिन्दी दिवस **2019**" के पावन अवसर पर मुख्य अतिथि "प्रोफ़ेसर श्री कृष्ण श्रीवास्तव", कुलपति महोदय, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, विजयी प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए।

"हिन्दी दिवस **2019**" के पावन अवसर पर प्रतिभागी द्वारा हिन्दी कविता पाठ करने की एक झलक।

"हिन्दी दिवस **2019**" के सुअवसर पर सभागार में उपस्थित सभी अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण द्वारा "राष्ट्रगान की प्रस्तुति" की एक झलक।

गणतंत्र दिवस **2020** के पावन अवसर पर "राष्ट्रीय ध्वजारोहण" करते हुए प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), महोदय एवं उपस्थित अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण की एक झलक।

स्वतंत्रता दिवस **2020** के पावन अवसर पर प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), महोदय "राष्ट्रीय ध्वजारोहण" करते हुए।

कार्यालय द्वारा आयोजित नई "ई-सामान्य भविष्य निधि" एप्लीकेशन शुभारंभ करने की झलक जिसके द्वारा सभी संबंधित उपभोक्ता ऑनलाईन के माध्यम से स्वयं से जुड़ी हुई सामान्य भविष्य निधि की सूचना अविलंब ही प्राप्त कर सकते हैं।

गणतंत्र दिवस **2020** के पावन अवसर पर वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) महोदय, सामुदायिक भवन, लेखापरीक्षा एवं लेखा इस्टेट, मोतीनगर, शिलांग में "राष्ट्रीय ध्वजारोहण" करते हुए एवं उपस्थित गणमान्यों की एक झलक।

स्वतंत्रता दिवस **2020** के पावन अवसर पर वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) महोदय, सामुदायिक भवन, लेखापरीक्षा एवं लेखा इस्टेट, मोतीनगर, शिलांग में राष्ट्रीय ध्वजारोहन करते हुए एवं उपस्थित गणमान्यों की एक झलक।

गणतंत्र दिवस **2020** के अवसर पर कार्यालय द्वारा बच्चों के लिए आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की एक झलक।

गणतंत्र दिवस **2020** के पावन अवसर पर सामुदायिक भवन, लेखापरीक्षा एवं लेखा इस्टेट, मोतीनगर, शिलांग में महिलाओं के लिए आयोजित "खेल प्रतियोगिता" की एक झलक।

गणतंत्र दिवस **2020** के पावन अवसर पर सामुदायिक भवन, लेखापरीक्षा एवं लेखा इस्टेट, मोतीनगर, शिलांग में बच्चों के लिए आयोजित खेल प्रतियोगिता की एक झलक।

कार्यालय में आयोजित "सेवानिवृत्ति कार्यक्रम" में स्थापना अधिकारी महोदय सभागार में उपस्थित अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण को संबोधित करते हुए।

Covid-19 महामारी के कारण कार्यालय को संक्रमण से बचाव हेतु समुचित रूप से सैनिटाइजड प्रक्रिया एवं सफाई अभियान की एक झलक।

कार्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला के दौरान उपस्थित प्रतिभागीगण की एक झलक

कार्यालय में आयोजित हिन्दी कार्यशाला की एक झलक

कार्यालय में "स्वच्छता निरीक्षण" के दौरान औपचारिक परिधान में उपस्थित वर्ग - "ग" के कर्मचारीगण की एक झलक।

मेरी भावनाएँ

☐ श्रीमती नमिता भट्टाचार्या

हमारा अच्छा वक्त दुनिया को बताता है हम क्या हैं,
बुरा वक्त हमें बताता है दुनिया क्या है।
दूसरों की बेटी को कभी मत समझना तुम पराया,
दूसरों की बेटी ही तुम्हारे कुल की शान बढ़ाएगी।
किलकारी वह ही लाएगी, खुशियाँ भी वह ही लाएगी।
दूसरों को बदलने के लिए खुद को बदलना भी सीखो।
शंकर बनना हो अगर तो विष का घूँट पीना भी सीखो।
उजाले की परिभाषा न मिलेगी किताबों में तुम्हें,
उसे पाने के लिए खुद दीपक बन जलना भी सीखो।
रत्न तो लाखों मिले मगर ज्ञान-रत्न न मिला,
खोजते-खोजते चली गई धूप जिंदगी की, लेकिन बचपन न मिला।
हर आँख यहाँ यूँ तो बहुत रोती है, मगर दिल का दर्द किसी को दिखाई नहीं देता है।
दर्द बिन कविता कभी मधुरिम नहीं होती, दुनियाँ में एक माँ ही है जो कभी नाराज नहीं होती।
दीप जलते हैं हृदय में जब मोहब्बत के, तो रोशनी किसी दीपावली से कम नहीं होती।

चिंता

☐ श्री राहुल ढाका
डी.ई.ओ.

चिंता कोई बीमारी नहीं है। यह एक सामान्य मानसिक अवस्था है। जिसमें इंसान अपना मानसिक संतुलन खो देता है। यह आजकल समाज में देखने को बहुत मिल रहा है। जब व्यक्ति डिप्रेशन में होता है तो उसे सही अथवा गलत में कोई अंतर समझ में नहीं आता है और डिप्रेशन अगर ज्यादा बढ़ जाता है तो इंसान के लिए घातक बन जाता है। डिप्रेशन की अवस्था में व्यक्ति अपनों से भी धीरे-धीरे दूर रहने लगता है। इसलिए चिंता से दूर रहने का भरसक प्रयास किया जाना चाहिए। अगर जीवन में कोई समस्या है तो उसे अपने परिवार और मित्रों से साझा करनी चाहिए एवं उनके साथ मिलकर इस बीमारी को हमेशा के लिए अपने जीवन से समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

माँ

□ श्रीमती दीपा गुप्ता

हम सबकी आँख खुली माँ की गोंद में।
माँ का अनुपम प्यार मिला।
हमें माँ के स्वर के बोल मिले।
माँ से यह संसार मिला।
माँ से ममता मिली।
जिससे जीवन को हम सभी ने है जाना।
माँ से ही वात्सल्य मिला।
उससे हमने बचपन को है पहचाना।
जिंदगी का पहला पाठ पढ़ाया माँ ने।
हर एक की तुतली बोली में।
उँगली पकड़ के चलना सिखाया माँ ने।
कभी सुलाया पालने में।

तो कभी अपनी गोद में।
अगर मैं गिरी चलते-चलते।
तो गोद में उठा लिया माँ ने।
रात-रात भर जाग-जाग कर।
माँ ने लगाया अपने गले से।
इस दुनिया के पावन शब्दों में।
जिसकी गरिमा का पार नहीं।
हर मानव जिससे जुड़ा हुआ है।
माँ से बढ़ कर कोई नहीं।
बात तो इतनी सी है कि सुबह देर से उठूँ ना।
तो कोई टोकने वाला नहीं है।

शुभ–विचार

□ श्रीमती सायंन्तनी गुप्ता

किसी वृक्ष पर लगे सेब गिने जा सकते हैं।
किन्तु एक सेब में कितने वृक्ष समाये हैं।
इन्हें कौन जान सकता है।
मनुष्य चतुर तो है पर बिना ठोकर लगे, सच्चाई और ईमानदारी नहीं सीख पाता है।
पूजा करना छोटी बात है, लेकिन आज्ञा का पालन करना बड़ी बात है।
चंद्रमा के लिए शीतल होना जितना स्वाभाविक है,उतना ही सज्जन के लिए उदार होना।
समझदार वह है जो अपने आपको सभी बंधनों से मुक्त रखे।
जीवन का एक भी क्षण करोड़ों मुद्राएँ देने पर भी वापस नहीं मिलते।
समय और जिंदगी दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।
जिंदगी समय का सदुपयोग सिखाती है और जिंदगी की कीमत सिखाती है।
शिष्टता का मूल्य कुछ नहीं है परंतु उससे हर चीज खरीदी जा सकती है।
आज जो चीज जो तुम्हारे पास है वह एक दिन किसी और का था।
आज जो तुम्हारा है, कल किसी और का होगा।
तुमने क्या खोया है जो तुम्हारा कभी था ही नहीं।

मेघालय

□ श्रीमती पल्लवी सोम

पर्वत प्रदेश, पल-पल परिवर्तित करे प्रकृति का वेश।
मेघ आए बड़े बन-ठन के, संवर के,
आगे-आगे नाचती गाती हवा चली,
झमा-झम बारिश से पानी की धारा चली।
मोती को लहरें से भी सुंदर, झरते हैं आँख भरे निर्झर।
मेघों का आलय मेघालय, प्रकृति की गोद में बैठे हुए।
बादलों का घर है मौसिनराम।
तेरा है बड़ा परिचय, प्रकृति की बेटी है तू
मेघालय तो मेघों का है आलय, नहीं है किसी से तुलना इसकी।

प्यारा हिंदुस्तान

□ **श्री सुशांत बी. रसाईली**
पुत्र - श्री राजेश कुमार रसाईली
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सुनलों विनती है भगवान।
हम सब बालक हैं नादान।।
पढ़ना-लिखना अपना काम।
घर-विद्यालय अपना धाम।।

पढ़ लिखकर हम आगे बढ़ें।
हर गलती को पीछे छोड़ें।।
माँ-बाप का नाम ऊँचा करें।
अच्छे अच्छे काम करें।।

गुरु का सदा आदर करें।
छोटों को सदैव प्रेम करें।।
सदा देश का नाम बढ़ाएँ।
कदम से कदम आगे बढ़ाएँ।।

सुन लो विनती है भगवान।
हम सब बालक है नादान।।
धन दौलत कुछ नहीं है पास।
हमें बना लो अपना दास ।।

शिशिर–वर्णन

□ श्रीमती सीमा थापा

शिशिर सिहकती सि सि करती, सर्द हवा चलती।
हरित ललित हरियाली के ऊपर, गिरी गाज लहराती चलती।
हड़ हड़कंप हाड़ तक हिला कर, सिकुड़ी चली गई।
कण कण से सर्दी फूट रही, अंतस को दहलाती चली गई।
वृक्षों के डालों पर बैठी, पत्तों का रस वह सोख गई।
सनन सनन वह सनक रही है, कड़वी तीखी लय छोड़ गई।
नीरव स्तब्ध हुई दुनिया है, ठुमुक ठुमुक वह नाच रही है।
जैसे अपने दर्द छिपा कर, झिहिर झिहिर नभ झिहिर रहा है।

सिविल सेवा बनाम हिन्दी भाषा

□ श्री अमित कुमार वर्मन
डी.ई.ओ

सिविल सेवा परीक्षा भारत में अंग्रेजों की देन है या फिर हम यूँ कहें कि परीक्षा की शुरुआत भारत में अंग्रेजी शासन के समय में शुरू हुई थी, जो तब से अबतक चलता आ रहा है। इसमें समय समय पर बहुत सारे बदलाव देखने को मिले हैं और इस परीक्षा को करने की जिम्मेदारी भारत में संघ लोक सेवा आयोग को है। इस परीक्षा में शामिल होने वाले विद्यार्थी या तो अँग्रेजी भाषा या आठवीं अनुसूची में शामिल किसी भाषा का प्रयोग कर सकते हैं। जिसमें **22** भाषाएँ शामिल है। ऐसा करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि जो व्यक्ति अंग्रेजी का ज्ञान नहीं भी रखते हैं वे भी इसमें शामिल हो पाएँ। जबकि वास्तविकता कुछ और ही है। **2015** के आंकड़ों के अनुसार **350** में से सिर्फ **15** हिन्दी में लिखें, **2016** में **377** में से **13** हिन्दी में लिखें, **2018** में **370** में से सिर्फ **8** हिन्दी में लिखें, **2019** में **326** में से सिर्फ **8** हिन्दी में लिखें। इस तरह के आंकड़े देखने से पता चलता है कि दिन पर दिन हिन्दी में लिखने वालों की संख्या घटती जा रही है, जो बहुत ही चिंता का विषय है। जबकि **2019** के आंकड़ों के अनुसार अन्य क्षेत्रीय भाषा में लिखने वालों की संख्या भी **10** से कम है।

अतः भारत सरकार को इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। इससे यह पता चलता है कि आजादी के कई दशकों के बाद भी हम अंग्रेजी भाषा से ही घिरें हैं और इससे अन्य भाषा से परीक्षा में शामिल होने वाले विद्यार्थी को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। एक क्षेत्रीय या हिन्दी भाषी विद्यार्थी को अंग्रेजी भाषा वाले विद्यार्थी से प्रतिस्पर्धा करना बहुत ही कठिन है क्योंकि वे अपने जीवन काल में अंग्रेजी को कभी पढ़ें ही नहीं हैं। अगर प्रतिशत आंकड़ें की बात करें तो यह **5** प्रतिशत से भी कम है।

भक्ति की शक्ति

□ **श्री प्रियतोष चौधुरी**
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

जब भक्ति खाने के चीजों में प्रवेश करती है, तो वह प्रसाद बन जाती है।
जब भक्ति पानी में प्रवेश करती है, तब वह पानी अमृत का रूप ले लेता है।
जब भक्ति भ्रमण में आती है, तो वह तीर्थ यात्रा का रूप ले लेती है।
भक्ति जब इमारत में आती है, तो वह पूजा अथवा प्रार्थना स्थल बन जाती है।
भक्ति जब कर्म में आती है, तो वह जनसेवा बन जाती है।
भक्ति जब मन में आती है, तो वह मानव बन जाती है।

(स्वामी विवेकानंद के संदेशों से प्रेरित)

दिव्यांग और किताबें

□ **श्री सुमित कुमार वर्मन,**
भाई - श्री अमित कुमार वर्मन
डी.ई.ओ

दुनिया में एक अरब से भी अधिक दिव्यांग समाज में सम्मान के साथ जीने की कोशिश में लगे हैं। भारत में भी बड़ी संख्या में ऐसे दिव्यांग अपनी विशिष्ट संख्याओं के साथ राष्ट्रीय मानव संसाधन को समृद्ध कर रहे हैं। दिव्यांग अलग-अलग तरह की चुनौतियों का सामना करते हुए अपना सर्वोतम देने की इच्छा रखते हैं। किताबें दिव्यांगों के जीवन को सशक्त बनाने और उन्हें अपनी क्षमताओं के विकास में प्रमुख भूमिका निभाती है। इसलिए दिल्ली में चल रहा विश्व पुस्तक मेला इस बार दिव्यांगों की पुस्तक की आवश्यकताओं पर केंद्रित है। यहाँ दिव्यांग के प्रतिभा और विकास के प्रोत्साहन के लिए हर रोज नई-नई गतिविधियाँ आयोजित की जा रही है और दिव्यांगों के पठन आवश्यकताओं के क्षेत्र में हुए शोध और प्रयासों को प्रदर्शित किया जा रहा है। बड़ी संख्या में लोग इस अभूतपूर्व आयोजन का लाभ उठा रहे हैं। इसमें बहुत सारी चुनौतियों भी हैं।

हमारे दिव्यांग जन समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। उनकी उपलब्धियाँ, उनकी आवश्यकताओं, उनकी कठिनाइयाँ, उनका संघर्ष इन सब के प्रति समाज जागरूक हो और जो एक भाव उनके प्रति रहता है कि ये दिव्यांग व्यक्ति है तो ये दया का पात्र है, सहानुभूति का पात्र है, ये एक अच्छा भाव नहीं है। इससे उनमें आत्महीनता उत्पन्न होता है। जबकि आवश्यकता इस बात की है कि हम उनके अंदर आत्मविश्वास जगाएँ। इस आत्मविश्वास को जगाने के लिए समाज का किसी भी दिव्यांग के प्रति एक सम्मान जनक भाव होना जरूरी है। समानता के स्तर पर व्यवहार हो। आज दिव्यांग समाज के क्षेत्र में, खेल के क्षेत्र में, कला के क्षेत्र में, संगीत के क्षेत्र में, एक से बढ़ एक प्रतिभाशाली लोग हैं।

माता–पिता

□ **श्री पीटर चौधुरी**
पुत्र - श्री प्रियतोष चौधुरी
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

इंसान जिंदगी में आते जाते रहते हैं, जैसे मौसम में परिवर्तन आते जाते रहते हैं, जैसे हमारे जीवन में कुछ व्यक्ति या सहकर्मी इस तरह आते हैं जैसे बहता हुआ पानी। कुछ दिन बाद सभी चले जाते हैं, लेकिन माता पिता हमारे हर सुख दुःख में हमेशा साथ रहते हैं।

इसलिए मेरे प्रिय माता-पिता से मैं बहुत प्यार करता हूँ। मैं कभी भी अपने माता-पिता को दुःखी देखना नहीं चाहता हूँ। मैं हमेशा अपने माता-पिता के हर सुख दुःख में साथ रहना चाहता हूँ।

कुछ पन्ने

□ **श्रीमती उमा देवी थापा**

खून से लथ पथ पन्ने, प्यार के खुशबूदार पन्ने।
गरीबों के फटे हुए पन्ने, लाभ नहीं फिर खोल के।
अमीरों के पन्ने, होंगी उसमें सिर्फ पैसों की बातें।
वही होगी उसमें सिर्फ पैसों की कहानी, कोई किसी से कम नहीं।
उसमें भी कई कहानियाँ होंगी, देश को, समाज को धोखा देने की।
दुःख लगता तो है,
पेट भर सिर्फ भोजन के बारे में ही, सोचने को मजबूर गरीबों के इस पन्ने में।
जिसमें गरीबों का भोजन भी कोई छीन लेता है,
महिलाओं पर अत्याचार की घटानाओं के पन्ने।
स्वाधीनता की कथाओं के पन्ने, अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने के पन्ने।
खून से लथ पथ पन्ने तो,
अदालत के पन्ने, और कुछ कारागारों के पन्ने।
लेकिन कुछ पन्ने ऐसे भी हैं, जो खोले नहीं जाते।
डरावनी खाली खाली पन्ने, बिना शब्द के पन्ने।

नई शिक्षा नीति

□ श्री अमित कुमार वर्मन
डी.ई.ओ

भारत में आजादी के बाद अब तक तीन शिक्षा नीति बनाई जा चुकी है। पहली बार **1968**, दूसरी बार **1986**, और तीसरी बार **2020** में। इसका मसौदा **2019** मई में ही तैयार हो गया था। उसपर जनता के सुझाव माँगे गए थे जिस पर लगभग **12,5000** सुझाव आए हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के द्वारा और इन सुझावों को भी इस नई शिक्षा नीति में शामिल किया गया है। इस शिक्षा नीति के छह मुखी स्तंभ है **1**. स्कूली शिक्षा **2**. भाषा **3**. उच्च शिक्षा **4**. प्रोद्दयोगिकी **5**. वित्तीय **6**. कार्यान्वित करना। अब तक जो शिक्षा हमारे देश में दी जा रही है वह **10+2** प्रणाली पर आधारित है जबकि नई शिक्षा प्रणाली को **5+3+3+4** में बाँट दिया गया है।

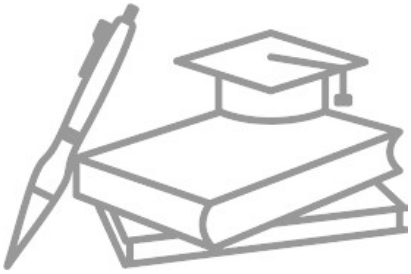

पहले **10** वर्ष सामान्य पढ़ाई होती थी अर्थात सभी विषयों की और **2** वर्ष विशेष विषय की पर नई शिक्षा नीति में **5** वर्ष की मूलभूत शिक्षा, **3** वर्ष मिडिल और **4** वर्ष सेकेन्डरी होगी। इस नई शिक्षा प्रणाली की आलोचना भी हो रही है क्योंकि सरकार प्रथम के तीन या चार वर्ष की शिक्षा के लिए आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं पर निर्भर है, जिसके लिए सरकार आंगनबाड़ी के कार्यकर्ताओं को **6** माह और **12** माह की डिप्लोमा का कोर्स कराएगी। इसमें वर्ष में **2** बार बोर्ड परीक्षा कराई जाएगी। जिसमें विद्यार्थी अच्छे अंक प्राप्त करेंगे वही मान्य होंगे । जिस विषय में विद्यार्थी को लगेगा की वह कमजोर है वहाँ पर विद्यार्थी को विकल्प मिलेगा। पहले की प्रणाली के अनुसार जो विद्यार्थी विज्ञान विषय चुनते थे वे सिर्फ विज्ञान ही पढ़ते थे पर अब उन्हें नई प्रणाली में विज्ञान के साथ इतिहास या फिर भूगोल भी साथ साथ पढ़ सकते हैं।

पत्थरों के देश में

□ श्रीमती ममता दे

अजनबी पत्थरों के देश में,
देखा इंसान पत्थरों के बने।
बहुत सहलाया, प्यार भी किया।
पलकों पर भी बैठाया,
सोचा कि बोल उठेंगे यह पत्थर।
पाकर आत्मीयता का एहसास,
जोर जोर से उन्हे झकझोरा।
उठाकर कर जब देखा दोनों हाथ,
लहू लुहान था हाथ हमारा।

शब्द चुभ गए थे ऐसे,
भूमि में झरती बूंदों जैसे।
अगर बनाया पत्थरों का देश,
तो मुझे क्यों बनाया इंसान?
अगर बना दिया इंसान,
तो पत्थर दिल क्यों न बनाया?
कम से कम इस दिल में,
इंसानियत की चाहत तो न होती?

बचपन की मजदूरी

□ **सुश्री अदविका ढाका**
पुत्री- श्री राहुल ढाका, डी.ई.ओ

भिन्न भिन्न देशों में आज भी बच्चों को अपना बचपन नसीब नहीं होता है क्योंकि निम्न जाति के बच्चे अपनी उम्र में ही मजदूरी करने के लिए बाध्य होते हैं और जैसा कि सभी जानते हैं अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रति वर्ष **12** जून को बाल मजदूरी के विरोध में दिन मनाते हैं। लेकिन फिर भी बड़ी संख्या में बच्चे मजदूरी के साथ बुरा व्यवहार और उन्हें अच्छा रास्ता नहीं गलत रास्ता दिखाना आम बात है। बाल मजदूरी ग्रामीण क्षेत्रों के साथ साथ शहरी क्षेत्रों में भी बहुत ज्यादा देखने को मिलती है। यदि हम बालश्रम मंत्रालय के आंकड़े कि बात करे तो हम देखते है कि उनमें लगभग **50** प्रतिशत लड़कियां ही हैं और जिनमें से बहुत सी लड़कियां तो तस्करी कि भी शिकार होती हैं। जो बच्चे अपने सामर्थ्य और गौरव से वंचित हैं और उनके मानसिक एवं शारीरिक विकास के लिए जो काम हानिकारक है, वह भी बाल मजदूर है ।

अगर बच्चे कि उम्र के हिसाब से देंखे तो **8-14** वर्ष के बच्चों के मामले हमारे देश में उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, गुजरात, असम, कर्नाटक राज्यों में ज्यादा देखने को मिलती है। यह सब ध्यान में रखते हुए हमारी सरकार को ऐसा अधिनियम बनाना चाहिए, जिससे हमारे देश में हो रही बाल मजदूरी न हो, बच्चों की शिक्षा पर जोर दिया जाए। जिससे सभी बच्चे जागरूक हो और बाल मजदूरी कराने वालों पर अधिनियम के आधार पर जुर्माना लगाया जाए और कारावास अनिवार्य हो। जिससे हमारा देश एक खुशहाल हो कर स्वतंत्र बना रहे।

पारदर्शी कराधान

□ **श्री सुमित कुमार वर्मन,**
भाई - श्री अमित कुमार वर्मन
डी.ई.ओ

13 अगस्त **2020** को हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने पारदर्शी कराधान की शुरुआत की है। प्रधानमंत्री जी ने इसे देश में चल रहे ढांचागत सुधार का नया पड़ाव बताया है। इस मंच के जरिए देश में कराधान प्रणाली सिमलेश, पेनलेश, फेशलेश बनेगी। इस अवसर पर प्रधानमंत्री जी ने देशवासियों से आगे बढ़कर भुगतान करने की अपील की है। इस नई प्रणाली से कर प्रणाली में सुधार आएँगे और सरल बनाने के प्रयासों को और बल मिलेगा। देश का ईमानदार करदाता देश के निर्माण में, विकास में बहुत बड़ी भूमिका निभाता है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि अगर कराधान में पारदर्शिता से रिश्वत पर काफी हद तक लगाम लग जाता है और इससे व्यापार में, बाजार में, निर्णय लेने की जरूरत भी कम होती है।

इससे आम नागरिक का विश्वास और भी ज्यादा बढ़ जाती है। सरकारी प्रणाली में इससे तकनीकी का भी इस्तेमाल बढ़ता है और हम जितना ज्यादा तकनीक का इस्तेमाल करेंगे, पारदर्शिता उतनी ही ज्यादा बढ़ेगी। इससे कार्यकुशलता बढ़ता है। कराधान पारदर्शिता से भारत भी विश्व के गिने चुने देशों में शामिल हो गया है।

श्री सत्यपाल मलिक राज्यपाल के कार्यकाल और विवरण

□ **श्री प्रिंस तोमर**
पुत्र-श्री श्रवण कुमार
डी.ई.ओ

श्री सत्यपाल मलिक जी, भारतीय राजनीतिज्ञ है तथा आप गोवा के राज्यपाल थे। आप **30** सितंबर **2017** से **21** अगस्त **2018** तक बिहार राज्य के राज्यपाल एवं **23** अगस्त से **29** अक्टूबर **2019** तक जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल रहे। इससे पहले आप अलीगढ़ सीट से वर्ष **1989** से वर्ष **1991** तक जनता दल की तरफ से सांसद रहे। आप **1996** से समाजवादी पार्टी की तरफ से चुनाव भी लड़े। आप मेरठ से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं।

आप **21** अगस्त **2018** को जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल नियुक्त किए गए। श्री सत्यपाल मलिक जी ने जम्मू कश्मीर से विशेष अधिकार कानून को समाप्त करने में सक्रिय भूमिका निभाई। श्री सत्यपाल मलिक जी जम्मू-कश्मीर के एकमात्र ऐसे राज्यपाल हैं जिनके कार्यकाल के दौरान अनुच्छेद **35** (क) को समाप्त किया गया। वर्तमान में आप मेघालय के राज्यपाल हैं।

राजभाषा हिन्दी

□ **सुश्री प्रीति जोशी**
पुत्री - श्री कृष्णा जोशी
एम.टी.एस

भारत देश अनेक भाषाओं का देश है। हिन्दी भाषा हमारी मातृभाषा है। अब यह भाषा विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना चुकी है। हमारी भाषा हिन्दी भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के अनेक देशों के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुकी है। यह अंतन्त गौरव की बात है कि हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी का अध्ययन विदेशियों द्वारा भी उच्च स्तर पर विस्तृत रूप में हो रहा है। यह भी गौरव की बात है कि विश्व जगत में भी हिन्दी को प्रतिष्ठा प्राप्त है। **14** सितंबर **1949** को भारतीय संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा का स्थान दिया और संविधान के अनुच्छेद **343** (क) में यह प्रावधान किया गया है कि हिन्दी देवनागरी लिपि के साथ भारत की राजभाषा होगी। विदेशों में हिन्दी के लोकप्रिय होने के प्रमुख कारण भारतीय दर्शन, साहित्य और संस्कृति है।

अमेरिका के **33** विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन होता है। चीन में हिन्दी का अध्ययन **1942** से ही हो रहा है। फ्रांस के पेरिस विश्वविद्यालयों में भारतीय भाषाओं के चार विभाग हैं- हिन्दी, उर्दू, तमिल और बांग्ला। मारिशस में हिन्दी बहुत लोकप्रिय है। हिन्दी की इस समृद्धि में विदेशी विद्वानों का बहुत योगदान है। उन्होनों भारत और उसकी संस्कृति को समझने हेतु हिन्दी का अध्ययन्न किया। इसलिए हिन्दी विश्व में एक प्रतिष्ठित भाषा बनी और पूरे विश्व में अपनी जड़े जमा चुकी है।

शब्द–बाण

□ श्री नीरज कुमार गुप्ता
डी.ई.ओ

कुटिल शत्रु, जटिल घात,
रक्त-रंजित अनवरत अघात।
घायल वक्ष संग करे प्रहार,
वीरत्व ही उसकी जात-पात।।

निर्बलता पर प्रहार कर,
साहस कर तू आहार कर।
पाप-पुंजित अधर्मियों का,
वीरभद्र सा संहार कर।।

धरित्री की माटी लगा,
या चंदन का तिलक सजा।
शोषितों का उद्धार कर,
उठा धनुष या अस्त्र पजा।।

भ्रम रूपी वस्त्र निकाल,
पहन कवच या कुंडल उतार।
न्याय का बन तू पालनहार,
स्वयं ही बन जा एक बड़ी कतार।।

पथ कंकड़ नहीं आसान,
परिचित कंकड़ तू है पाषाण।
मृत्यु पूर्व जो न मरे,
तब विजय-कीर्ति गाए श्मशान।।

सत्य सुशोभित जब भाव आधार,
तब विष भी न करे कंठ को पार।
शब्द-बाण ये, है पुरुषार्थ का सार,
कपट-प्रपंच पर करता, जो तीखा-वार।।

संघर्ष : एक अमृत

□ श्री नीरज कुमार गुप्ता
डी.ई.ओ

संघर्ष वीरों का श्रृंगार,
मार्ग बिछाए हैं अंगार।
चख ले यह है अमृत-पान,
युद्ध मात्र तेरा अधिकार।।

अनभिज्ञ जो संघर्ष से रहता,
प्रयत्न से कुछ बात न कहता।
व्यर्थ जीवन उस मनुज का,
जो ताप संघर्ष न सहता।।

माना पराजय से तू है मचलता,
किन्तु बुरा वक्त भी है गुजरता।
पराजय के भी पांव थर्राते,
जब वीरत्व शौर्य हुंकार है भरता।।

जब झाँके पराजय के चेहरे,
ढ़ाल कर्म की लगा तू पहरे।
गूँज सुनाई दे गर अनचाही,
निर्भीक प्रहार करना तू गहरे।।

धन की कमी जो आए,
जब मायूसी साथ निभाए।
आत्मबल के पद-चिन्हों पर,
संघर्ष अकेला चलता जाए।।

जीत का स्वप्न धूमिल पड़ा था,
किन्तु हार न मानना था।
निर्णयों के इस क्षण से,
तब बालपन का सामना था।।

विजय श्री के मार्ग पर,
अडिग विरोधी जन-जन होगा।
तैयार खड़ा मैं रणभूमि में,
अब तो बस रण होगा।।

अब तो बस रण होगा।।

माँ की पीड़ा

□ **श्री राजीव जोशी**
पुत्र - श्री कृष्णा जोशी
एम.टी.एस

एक इंसान जो अपने घर से दूर है।
तुम क्या जानों उसके दर्द को वह तो उसको छिपा लेता है।
तुम तो माँ के हाथ का भोजन खा लेते हो।
उसे तो खुद ही बनाना पड़ता है।
जब माँ पूछती है कि बेटा कब आओगे।
तो बेटा कहता है कि माँ मैं जल्दी ही आऊँगा।
तुम क्या जानो उस माँ के दर्द को।
जिसने बड़ी मुश्किल से हमें पालन पोषण किया है।
माँ तो एक ईश्वर का रूप होती है।
इसे वही पाता है किसकी किस्मत होती है।
उन आनाथ बच्चों से पूछो जिनके पास माँ नहीं होती है।
कौन जाने उन बच्चों का दर्द जो फुटपाथ पर सोते हैं।
क्या पता कब गाड़ी आ जाए और उन्हें कुचल कर चली जाए।
तुम क्या जानो माँ के दर्द को,
जब तुम्हारे अध्यापक स्कूलों में पिटाई करते हैं।
तो माँ कहती है कि मेरे बेटे की कोई गलती नहीं है।
माँ का दिल ही कुछ ऐसा है, जो मानता नहीं।
माँ कहती है की घर का दीपक जल्दी ही आएगा।
जो मुझसे बहुत दूर है।
माँ सब कुछ हो माँ सब कुछ हो।
तू ही जन्मदाता, तू ही भाग्यविधाता, तुम्ही हो पालनहार माँ।
माँ सब कुछ हो माँ सब कुछ हो।
माँ का जो तुमने अपमान किया।
जो माँ का कभी न सम्मान किया।
वह भी कभी सम्मान न पाया।
जिंदगी भर ठोकरे खाया।
नहीं किया जीवन में काम।
हो कर रह गया बदनाम।
माँ की ममता की तुलना नहीं है।
माँ के आचल जैसा पालना नहीं है।
माँ का दूध अमृत की धार है।
जिसका न कर पाओगे उद्धार।
कितना भी पा लो सेवा सम्मान।
तुम कैसे भी हो तो माँ ने छुपाया।
लेकिन तूने क्या किया।
तूने जगह पर शोर मचाया।
थोड़ा सा भी गम नहीं खाया।
हो गए सारे बदनाम।
इसलिए करो अच्छे काम।
जग में हो तुम्हारा नाम।
बनते जाए अच्छे काम।
माँ सब कुछ हो, सब कुछ हो।
बोलो माँ, माँ बोलो माँ।

दोस्ती

□ **श्री सुरेन्द्र कुमार**
आशुलिपिक

दोस्ती का रिश्ता भी कितना हसीन होता है,
जिसको मिलती है वह बड़ा ही खुशनसीब होता है।
यूँ तो मिलते है दुनियाँ में बड़े लोग,
पर सच्चा दोस्त दिल के करीब होता है।
जब भी जिंदगी में कोई दुःख या तन्हाई होती है,
कोई हो न हो साथ, सच्चे दोस्त की परछाई जरूर होती है।
कहते है मिल जाती है दुनियाँ की हर दौलत,
पर दोस्ती जिंदगी की सबसे बड़ी कमाई होती है।
अलग अलग रिश्ते है इस दुनिया में माँ-बाप, भाई, बहन,
मगर हर एक रिश्ता दोस्ती में समाई होती है।
कभी डाँटकर, तो कभी प्रेम से, जो देता है सहारा,
जीवन की गलियों में जो कर देता है उजियारा।
अरे, और कोई नहीं, वही तो है सच्चा दोस्त हमारा, सच्चा दोस्त हमारा।

अध्यात्म एक आंतरिक विज्ञान

□ **श्री नीरज कुमार गुप्ता**
डी.ई.ओ

अध्यात्म दो शब्दों "अध्य + आत्म" का संयोजन है जिसका शाब्दिक अर्थ "स्वयं का अध्ययन है। वस्तुतः अध्यात्म हमारे सम्पूर्ण मानसिक एवं शारीरिक व्यवहारों के संचालन आदि के वास्तविक स्वभाव और कार्य-प्रणाली को संचालन का विज्ञान है।

अध्यात्म हमारे सम्पूर्ण आंतरिक भावनाओं जैसे प्रेम, प्रसन्नता, क्रोध, लोभ, दुर्बलता आदि विचारों की उत्पत्ति के कारणों को सक्रियतापूर्वक देखने, समझने और आवश्यकता अनुसार नियंत्रित करने की सर्वश्रेष्ठ कला है। अध्यात्म कोई विश्वास पर आधारित प्रणाली नहीं है बल्कि विचार पर आधारित एक अनवरत अथवा सतत खोज करने की प्रक्रिया है, अतः यह एक तर्क आधारित वैज्ञानिक खोज है। वर्तमान युग में मनुष्य भौतिकता, आधुनिकता एवं अंतहीन इच्छाओं की पूर्ति हेतु एक अंध दौड़ में इस प्रकार से संलिप्त हो चुका है कि उसने नैतिकता और सामाजिक मापदण्डों कि सभी सीमाएँ लांघ दी है जिसके कई विकृत परिणाम जैसे जल संकट, ग्लोबल वार्मिंग, वनोन्मूलन, यहाँ तक कि दो विश्वयुद्धों कि छाप परिलक्षित हो चुकी है।

अतः आज अध्यात्म की ओर प्रस्थान एक अनिवार्यता बन चुकी है ताकि हम समझ पाएँ कि प्रसन्नता, तृप्ति और शांति का संबंध भौतिकवाद से नहीं बल्कि हमारे विचारों और आंतरिक मनोदशा के बनावटों से है और इस बनावट के धागों और गांठों को समझने का सशक्त माध्यम ही अध्यात्म कहलाता है।

परमात्मा की लाठी

□ **श्रीमती मोनिका तोमर**
पत्नी- श्री श्रवण कुमार
डी.ई.ओ

एक साधु वर्षा के जल में प्रेम और मस्ती से भरा चला जा रहा था, कि उन्होंने एक मिठाई की दुकान को देखा, जहां एक कढ़ाई में गरम दूध उबाला जा रहा था तो मौसम के हिसाब से दूसरी कढ़ाई में गरमा गरम जलेबियाँ तैयार हो रही थी। साधु कुछ क्षणों के लिए वहाँ रुक गया। शायद भूख एहसास हो रहा था या मौसम का असर था। साधु हलवाई की भट्टी को बड़े गौर से देखने लगा। साधु कुछ खाना चाहता था लेकिन साधु की जेब ही नहीं थी तो पैसे भला कहाँ से होते, साधु कुछ पल भट्टी से हाथ सेंकने के बाद चला ही जाना चाहता था कि नेक दिल हलवाई से रहा ना गया और एक प्याला गर्म दूध और कुछ जिलेबियाँ साधु को दे दी। साधु ने गर्म जिलेबियाँ गर्म दूध के साथ खाई और फिर हाथों को ऊपर कि ओर उठाकर हलवाई के लिए प्रार्थना की और फिर आगे चल दिया। साधु का पेट भर चुका था।

दुनिया के दुखों से बेपरवाह, वह फिर एक नए जोश के साथ बारिश में पानी की छीटें उड़ाता चला जा रहा था। वह इस बात से बेखबर था कि युवक नव विवाहित जोड़ा भी बारिश के पानी से बचता हुआ उसके पीछे चला आ रहा है। एक बार इस मस्त साधु ने बारिश के पानी में जोड़ से पैर मारी। बारिश का पानी युवती के कपड़ो पर जा पड़ा। इस तरह उस युवती के कपड़े गंदे कीचड़ युक्त पानी से गंदे हो गए। उसके युवा पति से यह बर्दाश्त नहीं हुआ। वह आगे बढ़ा और साधु से कहने लगा - तुमको नजर नहीं आता है, तेरी वजह से मेरी पत्नी के कपड़े गीले हो गए। साधु हक्का बक्का सा खड़ा था। युवा के आँखों में नफरत कि चिंगारी थी। साधु डर गया था। राह चलते दूसरे राहगीर भी उदासीनता से यह सब देख रहे थे लेकिन युवक के गुस्से को देख कर किसी में भी हिम्मत नहीं हुई कि कोई भी उसे रोक पाता। इसके बाद युवक ने एक थप्पड़ साधु के चेहरे पर जड़ दिया। साधु कीचड़ में गिर पड़ा। साधु ने आसमान को देखते हुए कहा कभी गर्म दूध और जलेबियाँ तो कभी थप्पड़। इसके बाद वह उठा और चल दिया। दूसरी ओर युवक अपनी पत्नी के साथ घर पहुँच कर अपनी जेब से चाबी निकाल कर अपने घर में गया। फिर वह सीढ़ियाँ चढ़ने लगा तभी अचानक उसका पैर फिसल गया ओर वह सीढ़ीयों से गिर पड़ा। उसकी पत्नी जोर जोर से चिल्लाने लगी। पड़ोसी आए लेकिन देर हो चुकी थी। युवक का सिर फट चुका था और वह मर गया। तभी पड़ोसियों कि नजर उसी साधु पर पड़ी। लोग आपस में बाटें करने लगे कि साधु ने शायद श्राप दिया हो इसलिए इसकी मौत हो गई। कुछ लोगों ने फिर साधु को घेर लिया और कहने लगे आपने श्राप दिया इसलिए यह मर गया। आप तो भगवान के भक्त हो, आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। साधु कहने लगा कि मैंने श्राप नहीं दिया। फिर साधु ने कहा कि मैंने इनकी पत्नी के कपड़े पर कीचड़ नहीं फेंका था, किंतु इस युवक ने मुझे थप्पड़ मारा था।

आगे साधु कहते है की भगवान बहुत शक्तिशाली हैं, वे अपने भक्तों से बहुत प्रेम करते हैं, दुनिया का बड़े से बड़े राजा भी उसकी लाठी से डरता है। सच है, उस परमात्मा की लाठी दिखती नहीं है और आवाज भी नहीं करती है। लेकिन जब पड़ती है, तो बहुत दर्द देती है। हमारे अच्छे कर्म ही हमें उसकी लाठी से बचाते हैं, इसलिए इंसान के कर्म अच्छे होने चाहिए।

ना जाने कितनी अनकही बातें साथ ले जाएंगे
लोग झूठ कहते हैं, खाली हाथ आए थे खाली हाथ ही जाएंगे।

कोरोना के फरिश्ते

□ **श्री घनश्याम कुमार**
भाई- श्री भागीरथ प्रसाद
डी.ई.ओ

हर तरफ मौत से इंसान को भागते देखा है।
हर किसी को अपनी जान बचाते देखा है।
कोई है जिसे अपने से ज्यादा अपनों की फिक्र हो रही है।
मैंने भगवान को डॉक्टर के रूप में आते देखा है।

छोड़ वो अपने परिवार को दूर हर दिन लड़ते जा रहे हैं।
किसी दूसरे की दौलत बेहिचक बचाते जा रहे हैं।
घर उनका भी अपना करता कोई इंतजार होगा।
सोचती वो माँ, मेरा बेटा अब किस हाल में होगा।

किसी माँ बाप के वो इकलौते जान को बचाता है।
किसी परिवार में वो फिर से दिए चलाता है।
कुछ भी है, किसका बेटा हर बार ये भूल जाता है।
वह हर दिन अपने देश को हर पल बचाता है।

किसी के भाई किसी के बेटे तो किसी के दोस्त बन जाता है।
जिंदगी में भरकर उजाला फरिश्ते बन जाते हैं।
अपनी जिंदगी को लगा कर दांव खुद लड़ते जा रहे हैं।
अपनों की खातिर अपनों से बिछड़ते जा रहे हैं।

दूसरों को बचाते बचाते कुछ अपनी जान गवां बैठे।
शुक्र करो उनका, जिनकी वजह से हम सलामत बैठे।
सूना किसी का आंगन उनके बिना भी हुआ होगा।
किसी और के खातिर अपने घर को अलविदा कहा होगा

योग

□ **श्री मनीष कुमार**
डी.ई.ओ

योग का सर्वप्रसिद्ध एक मंत्र है ओ३म् या फिर ॐ ही कह लें। ओ३म् अर्थात ब्रह्मांड की उत्पति का शब्द ओ३म् अर्थात ब्रह्मांड का सर्वाधिक कंपन्न करने' वाला शब्द। योग की स्द्भुत दुनियाँ में ओ३म् शब्द का स्थान सर्वोपरि है। यह पवित्र ध्वनि है और अनंत शक्ति का प्रतीक भी है। आप सोच रहे होंगे कि योग की इस शृंखला में हमने शुरुआत ओ३म् से क्यों किया? क्योंकि योग की शुरुआत इस पवित्र शब्द के साथ करने से योग सार्थक हो जाता है। योग की परंपरा अत्यंत प्राचीन है और इसकी शुरुआत हजारों वर्ष पहले हमारे देश भारत में हुई थी। शिव की आदि योगी तथा आदि गुरु माना जाता है जबकि शिव के बाद वैदिक ऋषि मुनियों से योग का प्रारम्भ माना जाता है। संस्कृत के शब्द योग की उत्पति युज से हुई जिसका अर्थ एकजुट करना है।

योग एक साधना है और इसे भगवान की सार्वभौमिक भावना के साथ व्यक्तिगत आत्मा को एकजुट करने के लिए एक साधन के रूप में परिभाषित किया जाता है। अर्थात योग मन के संशोधनों का दमन है ऐसा महर्षि पतंजलि ने कहा है। योग का महत्व और इतिहास हमारी कल्पना से भी परे है। पूर्व वैदिक काल से लेकर महर्षि पतंजलि का काल हो या फिर बुद्ध या महावीर का काल, योग ने हर काल में अपनी एक विकसित रूप में निखरी है। आधुनिक काल में स्वामी विवेकानंद, श्री टी कृष्णमचार्य, श्री अरविंदो, आचार्य रजनीश, स्वामी सत्येंद्र सरस्वती, स्वामी रामदेश इत्यादि की सहायता से योग अब पूरे विश्व में फैल गया है। पश्चिमी सभ्यता भी अब योग के महत्व को जानकार इसे अपनाने में लगे हैं। वर्तमान समय में योग गुरु रामदेव और भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की कोशिशों के फलस्वरूप योग को एक नई अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली जब भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की अपील के बाद **27** सितंबर **2014** को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के प्रस्ताव को अमेरिका द्वारा मंजूरी दी गई, जिसके बाद सर्वप्रथम इसे **21** जून **2015** को विश्व में विश्व योग दिवस के रूप में मनाया गया।

योग किसी खास धर्म, आस्था, पद्धतियों, समुदाय के अनुसार नहीं चलता है, इसे सदैव अंतरात्मा की सेहत के लिए एक कला के रूप में देखा जाता है। कोई भी व्यक्ति हो चाहे वह किसी भी धर्म को मानने वाला हो, अगर वह तलीन्नता से योग करता है तो वह इसका लाभ प्राप्त कर सकता है। ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग, पतंजलि योग, ध्यान योग, बुद्ध योग, जैन योग, लय योग, राज योग इत्यादि योग शैलियाँ हैं। हर शैली के अपने स्वयं के सिद्धांत एवं पद्धतियाँ है जो योग के परम लक्ष्य एवं उद्देश्य की ओर ले जाती है। स्वास्थ्य एवं तंदरुस्ती के लिए हम विभिन्न योग साधनाएँ बड़े पैमाने पर करते हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, षटकर्म, सूर्यनमस्कार, मंत्र जाप इत्यादि महत्वपूर्ण साधानाएँ हैं। योग से मेरा संबंध प्राणायाम एवं सूर्यनमस्कार से बहुत अधिक है। प्राणायाम प्राणों की संचार की विधि है। यह अष्टांग योग का चौथा चरण है। इसके माध्यम से चित की शुद्धि की जाती है। प्राणायाम के अंतर्गत अपने श्वसन की जागरूकता पैदा करना और पाने अस्तित्व के प्रकार्यात्मक या महत्वपूर्ण आधार के रूप में श्वसन को अपनी इच्छा से विनियमित करना शामिल है। यह अपने मन की चेतना को विकसित करने में मदद करता है।

बारह चरणों में सम्पन्न होने वाला सूर्यनमस्कार एक अत्यंत लाभकारी योग प्रक्रिया है। स्वस्थ त्वचा, स्वस्थ पाचन तंत्र, मजबूत मेरुदंड और शुद्ध शरीर की प्राप्ति हेतु सूर्यनमस्कार अवश्य किया जाना चाहिए। अंत में, मैं यही कहूँगा कि सार्वजनिक रूप से योग अपनाया जाना चाहिए। दैनिक क्रियाकलाप में योग को महत्वपूर्ण स्थान देने कि आवश्यकता है। आप भी योग करें, निरोग रहें और दूसरों को भी प्रेरित करें। स्वस्थ भारत की परिकल्पना योग के बिना संभव नहीं है।

चुटकुला

□ **श्री क्रिश राज देब**
पुत्र- श्रीमती माधबी देब
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

शिक्षक एवं छात्रः

शिक्षकः बड़ी बहन और छोटी बहन में क्या अंतर है?

छात्रः बड़ी बहन वह होती है जिसके लिए हमें काम करना पड़ता है और छोटी बहन वह होती है जो हमारा काम करती है।

नालायक को लायक बनाने का तरीकाः

बंतुः आज स्कूल से बड़े खुश वापस लौटे हो चंतु कोई खाश बात है क्या?

चंतुः हाँ, आज शिक्षक ने हमें किसी भी नालायक को लायक बनाने का तरीका बताया है।

बंतुः अच्छा वे कैसे हैं?

चंतुः नालायक लिखकर उसके आगे से 'ना' मिटा दो।

नालायक बन जाएगा।

रोहनः अध्यापक जी! राहुल कोई भी किताब नहीं लाया।

अध्यापकः राहुल आज तुम किताब क्यों नहीं लाए?

राहुलः मैं भूल गया था।

अध्यापकः तो तुम स्कूल क्यों नहीं आए?

राहुलः मैं यह भी भूल गया था लेकिन मेरी माँ ने मुझे याद दिलाया।

शिक्षक एवं छात्रः

शिक्षकः मैं आज तुमलोगों की परीक्षा लेने वाला हूँ।

अगर किसी को कुछ भी पूछना हो, तो वह अभी पूछ सकता है।

छात्रः शिक्षक महोदय आज आप परीक्षा में क्या पूछने वाले हैं?

मेरी बचपन की रेल यात्रा

□ **श्री दीनानाथ साह**
लिपिक/टंकक

रेल यात्रा के लिये टिकट पहले से आरक्षित करा लिए जाएँ तो अच्छा रहता है। समय पर रेलवे स्टेशन पहुँच जाए तो सफर का पूरा आनन्द उठा सकते हैं। गाड़ी की प्रतीक्षा में खड़े लोगों के साथ गर्दन उठा उठा कर रेल की पटरी को और गाड़ी आने की दिशा में बार बार देखना एक अजीब सा वातावरण तैयार करता है। प्लेटफार्म पर शोरगुल मेले जैसा आनन्द देता है।

खाने पीने के सामान की दुकानों से ठंडा, गर्म जो मर्जी पियो खाओ। रेलवे प्लेटफार्म पर साहित्य और पत्र पत्रिकाओं को खरीदने का शौक भी पूरा किया जा सकता है। कुली की सहायता से अपना सामान लगायें और खिड़की खोलकर ठंडी हवा का आनंद लें। साथ वाली सीट पर बैठे लोगों से बातचीत में, समय पंख लगा कर उड़ जाता है। कभी कभी तो गाड़ी में प्रारम्भ हुई दोस्ती जीवन भर चलती है। आजकल रेल यात्रा के इतिहास में नये पृष्ठ जुड़ गये हैं। धुंआ फेंकती कोयले से चलने वाली गाड़ी की जगह बिजली से चलने वाली तीव्रगामी शताब्दी और राजधानी एक्सप्रेस गाड़ियों ने ले ली है।

वातानुकूलित गाड़ियाँ और उनमें मिलने वाला बढ़िया भोजन तथा संगीतमय वातावरण किसे आकर्षित नहीं करेगा। इन गाड़ियों में अब न तो घर से खाना लाने की जरूरत होती है और न ही बिस्तर आदि। क्योंकि इन अत्याधुनिक रेल गाड़ियों मे हर प्रकार की सुविधा होती है। सुरक्षा के लिये प्रत्येक गाड़ी में सुरक्षागार्ड चलते हैं। यात्री टी.टी. को टिकट दिखा कर आराम से सो सकते हैं। सोच क्या रहे हैं? चलिए, रेल यात्रा कर भारत दर्शन की योजना बनायें। छुक छुक गाड़ी का आकर्षण बच्चों को उत्साहित करने के लिए पर्याप्त होता है। बच्चे हों या बड़े, यात्रा करना सभी को अच्छा लगता है। रेलगाड़ी से यात्रा करना और भी सुखद है। लम्बे सफर के लिये बस की तुलना में रेलगाड़ी अधिक आनन्ददायक है। इसमें इधर उधर चलने फिरने की एवं सोने, उठने बैठने, शौच इत्यादि की भी सुविधा रहती है।

यात्रा चाहे किसी भी प्रकार की हो चाहे वो बस, रेल, हवाई जहाज, पानी का जहाज, सभी आनंद प्रदान करने वाली होती है। यात्रा करने से हमें नई चीजें देखने को मिलती है, साथ ही अनेकों विचारों वाले लोगों से भी मिलने का मौका मिलता है। हमें भारत में यात्रा करते समय हर दूसरे शहर में नई संस्कृति देखने को मिलती है। शायद यात्रा करने का यही सबसे आनंदमय पल होता है कि हमें तरह तरह के लोग, प्रकृति और संस्कृति देखने को मिलती है। जब मैं दोस्तों के साथ खेल कर शाम को घर लौट कर आया तो माँ ने बताया कि कल हम शिलांग शहर देखने जा रहे है।

यह सुनकर मैं बहुत खुश हो गया क्योंकि हम काफी समय बाद कहीं पर घूमने जा रहे थे। मैं उस समय इतना खुश था कि खुशी के मारे मैं इधर-उधर कूद रहा था। थोड़ी देर बाद मन शांत हुआ तो मैंने माँ से कोतूहल वश पूछा कि

हम शिलांग कैसे जाएंगे माँ ने कहा कि पहले हम रेल से गुवाहाटी जाएंगे फिर वहाँ से टैक्सी से शिलांग जाएंगे। यह सुनकर तो मैं और खुश हो गया क्योंकि मैंने पहले कभी रेल से सफर नहीं किया था। बस किताबों और टीवी पर ही रेल को चलते देखा था। माँ ने शाम को ही सारे सामान की पैकिंग कर ली थी। ट्रेन रात के **3:00** बजे की थी।

माँ ने कहा तुम जाकर सो जाओ लेकिन मुझे नींद कहां आने वाली थी मैं पूरी रात भर यही सोच रहा था कि रेल का सफर कैसा होगा. जैसे-तैसे रात के **2:00** बजे और माँ ने मुझे उठाया और कहा कि तैयार हो जाओ रेलवे स्टेशन जाना है। मैं हाथ मुंह धो कर तैयार हो गया और पिताजी घर के बाहर टैक्सी बुला ली। घर के बाहर निकलें तो देखा कि सर्दी बहुत थी और कोहरा छाया हुआ था। हम टैक्सी में बैठ कर करीब **2:30** बजे दिल्ली स्टेशन पहुंचे। पिताजी ने पहले ही ट्रेन की टिकट बुक करा ली थी।

हमारी रेलगाड़ी का सफर बहुत अधिक होने वाला था क्योंकि हमें शिलांग जाना था। स्टेशन पहुंचने के बाद हम प्लेटफॉर्म पर बैठे हुए थे वहां पर मैंने देखा कि एक ट्रेन आ रही थी तो एक ट्रेन जा रही थी। वहां पर लोगों की बहुत ज्यादा भीड़ थी। रेल की सीटी इतनी जोरदार थी कि उसको **5** किलोमीटर दूर तक सुना जा सकता था। कुछ समय बाद क्या समय पर हमारी ट्रेन स्टेशन पर आ चुकी थी। पिताजी ने कुली से हमारा सामान ट्रेन के डिब्बे में रखवा दिया। फिर हम सभी ट्रेन के एक वातानुकूलित डिब्बे में जाकर बैठ गए वहां पर मैंने देखा कि बैठने के लिए बड़ी-बड़ी आरामदायक सीटें थी और ट्रेन का डिब्बा एक कमरे की तरह बड़ा था । ट्रेन में सभी प्रकार की सुविधाएं थी गर्मियों के लिए ए.सी. और पंखे की सुविधा थी तो सर्दियों के लिए हीटर की भी सुविधा थी। रेल के डिब्बे रोशनी की सुविधा के लिए कई लाइटें लगाई हुई थी। मुझे ऐसा लगा था कि मानो मैं किसी कमरे में बैठा हूँ। मैंने पहले कभी ट्रेन से यात्रा नहीं की थी इसलिए यह मुझे बहुत ही आनंद आ रहा था। फिर ट्रेन दूसरे दिन शाम के समय करीब **6** बजे गुवाहटी स्टेशन पहुंची और वहाँ से हम टैक्सी से शिलांग के लिए रवाना हो गए।

सॉरी (SORRY)

☐ **श्रीमती मेघा रानी प्रसाद**
पत्नी- श्री भागीरथ प्रसाद
डी.ई.ओ

मुझे पता है कभी-कभी कुछ ऐसा बोल जाती हूँ,
जिससे आपको बुरा लगता होगा।
कभी किसी बात पर ओवर रिएक्ट कर देती हूँ,
जो उस वक्त मुझे नहीं करना चाहिए था।
कभी मजाक मजाक में हद पार कर देती हूँ,
आप को खुश करने की कोशिश में।
अक्सर सब बेकार कर देती हूँ,
कभी चिल्ला उठती हूँ परेशानी में।
तो दिल पर मत लिया करना,
खामोश रहूँ किसी दिन।
तो तकलीफ में हूँ समझ लिया करना,
हाँ मानती हूँ आप मुझे समझते हो।
और संभालते भी तो आप ही हो मेरे गुस्से को,
सहते हो आंसू भी पूछते हो।
दर्द से निकालते भी तो आप ही हो,
हाँ मेरी बातों से कभी बुरा लग जाता होगा।
आपको पर जान लो कि वह सब दिल से नहीं बोलती,
आपसे अच्छा मुझे कोई और जानता भी नहीं है।
आपके अलावा इतना खुलकर,
मैं किसी से नहीं बोलती।
सॉरी अगर गलती से भी मैंने आपको तकलीफ दी हो,
सॉरी अगर उल्टी-सीधी आपसे कोई बात कह दी हो।
सॉरी अब यह गलती नहीं दुहराऊंगी,
सॉरी कहने की वजह अब वापस नहीं लाऊंगी

है क्या यह हँसी ?

□ श्री अरुण कुमार थापा

सब कुछ भूल कर हम सिर्फ हँसते हैं,
हँसी लगती है प्यारी।
जब हँसती है नारी,
लड़ती है जीवन में।
मुश्किलों से, तो कभी समाज से।
कभी परिवार से, तो कभी अपने आप से।
होते हैं कई दर्द, कई टूटे सपने।
पर रखती है मुस्कान, होंठों पर अपने।

मन में है आती, फिर वही बात।
क्या है हँसी?
होंठों पर मुस्कान, दिल में उमंग।
आँखों में चमक थी, पीड़ा दबाने की।
सच तो यह है कि, ऐसा भाव जो दिल, दिमाग, होंठों को,
और हर एक बंधन को तोड़े।
और कुछ लम्हों के लिए, हमें रब से जोड़े।

चुटकुला

□ श्री क्रिश राज देब
पुत्र- श्रीमती माधबी देब
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

1. एक बार चिंटू और पिंटू दुकान पर गए।
जब दोनों बाहर निकले तो चिंटू ने पिंटू से बोला : देखा, मैं कितना चालाक हूँ।
मैंने दुकान से **3** चॉकलेट चुरा कर अपनी जेब में डाल ली और किसी को पता भी नहीं चला।
पिंटू बोलाः मैं तुम्हें इससे से बढ़िया चीज करके दिखा सकता हूँ।
फिर दोनों वापस दुकान में गए
पिंटू बोलाः मुझे **3** चॉकलेट दो।
दुकानदार ने चॉकलेट दी और पिंटू उसे खा गया
पिंटूः अब तुम चिंटू की जेब देखो, तुम्हारी तीनों चॉकलेट वापस मिल जाएँगी।

2. बंतु का सिर फट गया।
चंतुः ये कैसे हुआ?
बंतुः मैं चप्पल से पत्थर तोड़ रहा था, मुझे एक आदमी ने बोला “कभी खोपड़ी” का भी इस्तेमाल कर लिया करो। मैंने उसकी बात मान ली।

कौन है नीच

□ **श्रीमती शालिनी दहिया**
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

ऊपर वाले ने जिन्हें समान बनाया, उन्हें क्या बांटोगे तुम ।
अपने घर के चिराग लौ में जलते नहीं, दूसरों के क्या बुझाओगे तुम ।।

नीच वो नहीं, जो दलित है, नीच सोच वाले क्या साक्षर हो तुम ।
दिन दहाड़े राक्षस बने फिरते हो, राम-नाम जप के पाप छुपा लोगे तुम ।।

जिस मिट्टी में मिल जाएंगे सब, उससे अलग कर पाओगे तुम ।
क्या गंगा नहाने मात्र से अनगिनत अपने पाप धो पाओगे तुम ।।

जन्म से उच्चता का मान है, मरने के बाद नरक से बच पाओगे तुम ।
इस धरा पर सब मिल जाएगा, अगले जन्म तक न रूक पाओगे तुम ।।

सदियों अंग्रेजों के गुलाम बने रहे, तब उच्च बन पाए थे तुम ।
अब नकली अहं के नशे में चूर हो, तब बांधते उनके जूते थे तुम ।।

शिक्षा स्वास्थ्य सबपर अधिकार है, क्यूं फिर घड़ी-घड़ी रोते हो तुम ।
उस नीच की दो रोटी देख, अपनी जलन ना रोक पाओगे तुम ।।

आधुनिकता का जामा ओढ़े, अपनी मनुवादी सोच क्या बेपर्दा कर पाओगे तुम ।
उस नीच के बेटे की नौकरी को ना हजम कर पाओगे तुम ।।

अब भी समय है, संभल जाओ, निडर नीच को और ना सताओ तुम ।
अपनी नीच सोच के होम से अंतर्मन का शुद्धीकरण कर लो तुम ।।

विशेष - कार्यालय में स्थित "खेल एवं सांस्कृतिक क्लब" की साज-सज्जा, नवीकरण एवं सौन्दर्यीकरण की समुचित परिकल्पना एवं उसकी रूप-रेखा तैयार करने में विशेष रूप से "श्री दीनानाथ साह, लिपिक/टंकक", जी की भूमिका अत्यंत सराहनीय है एवं इसके साथ ही साथ कार्यालय में समुचित स्वच्छता एवं संक्रमण से बचाव हेतु स्वच्छ वातावरण के प्रबंधन का समुचित ध्यान रखते हुए एक सैनिटाइजर यंत्र का निर्माण किया गया है जो एक स्वचालित सेंसर तकनीक युक्त यंत्र है एवं जिसे कार्यालय के "श्री दीनानाथ साह, लिपिक/टंकक", जी के द्वारा अनुपयोगी वस्तुओं को प्रयोग करके निर्मित किया गया है। कार्यालय "श्री दीनानाथ साह" जी की इस अनूठी पहल, योगदान, मार्गदर्शन एवं उनके इस अथक परिश्रम के लिए उन्हें धन्यवाद ज्ञापित करता है।

कार्यालय परिसर में स्थापित स्वचालित सैनिटाइजर यंत्र का समुचित प्रयोग करते हुए कर्मचारीगण की एक झलक।

"हिन्दी दिवस **2019**" के पावन अवसर पर वरिष्ठ अनुवादक, केन्द्रीय "गृह मंत्री" महोदय के हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में दिए गए राजभाषा हिन्दी से संबंधित संदेश को सभागार में उपस्थित सभी गणमान्यों के समक्ष संप्रेषित करते हुए।

"हिन्दी दिवस **2019**" के पावन अवसर पर उप महालेखाकार (लेखा व हकदारी एवं वी.एल.सी.) महोदय, विजयी प्रतिभागी को पुरस्कार प्रदान करते हुए।

"हिन्दी दिवस **2019**" के सुअवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दौरान उपस्थित सभी अधिकारीगण, सभी प्रतिभागियों को उत्साहित करते हुए।

"हिन्दी दिवस **2019**" के पावन अवसर पर हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा "प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता" कार्यक्रम के दौरान सभागार में उपस्थित सभी गणमान्यों से संवाद करते हुए।

कार्यालय द्वारा दिनांक 13.03.2020 को आयोजित 'एक दिवसीय खेल' प्रतियोगिता में 'वॉलीबॉल' के प्रतिभागियों की एक झलक

कार्यालय द्वारा दिनांक 13.03.2020 को आयोजित 'एक दिवसीय खेल' प्रतियोगिता में 'म्यूजिकल चेयर' के प्रतिभागियों की एक झलक